ISBN: 978-93-5636-415-8

वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान

राजीव अग्रवाल

राकेश कुमार सिंह

राजकुमारी

वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान

राजीव अग्रवाल

राकेश कुमार सिंह यादव

राजकुमारी

वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान

राजीव अग्रवाल

डीन—शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

(उत्तर प्रदेश)

राकेश कुमार सिंह यादव

एम० ए० (हिन्दी साहित्य), एम० एड०

राजकुमारी

बी० एल० एड०

वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान

राजीव अग्रवाल

राकेश कुमार सिंह यादव

राजकुमारी

E–book संस्करण: 2022

मूल्य: ₹48

ISBN: 978-93-5636-415-8

प्रकाशक:

राजकुमारी

ग्राम– बैरिया (चिरैया मोड़ रेवती रोड में), पोस्ट– बैरिया, जिला– बलिया (उ.प्र.)
पिन कोड– 277201

Mob.– +91 9721440593

ई–मेल: pricesraj1@gmail.com

प्राक्कथन

शिक्षा किसी राष्ट्र के नवनिर्माण एवं उनकी संस्कृति की वाहक होती है। शिक्षा के गौरवशाली अतीत पर ही उसके वर्तमान की दिशा निर्धारित होती है। शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार उसकी कार्यप्रणाली एवं जीवन व्रत में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है। शिक्षा न केवल पथ प्रदर्शक, ज्ञानवर्धक एवं प्रगति की द्योतक होती है बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय गरिमा को संरक्षित एवं संवर्धित करती है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करके उसके व्यवहार का परिमार्जन एवं परिष्करण किया जाता है।

शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन नहीं माना जा रहा परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं परंपराओं, मान्यताओं का परिचय न दें, तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। आज भारत में फैली बुराइयों, सामाजिक कुरीतियों के कारण नैतिकता का हास होता जा रहा है। इन समस्याओं को हल करने के लिए समाज को शिक्षित होना होगा और इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाना होगा ।

समाज के उत्थान एवं उन्नति के लिए प्राचीन काल से ही धर्मगुरु, समाज सुधारकों के प्रयास सराहनीय रहे हैं। समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं ने समाज में शिक्षा के व्यापक प्रसार के लिए योगदान दिया है। जैसे समाज में स्त्री शिक्षा, बालकों की शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा आदि इसी क्रम में एक और संस्थान समाज में वंचित और पिछड़े बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहा है। जिसे वनवासी कल्याण आश्रम के नाम से जाना जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक वनवासी कल्याण आश्रम के शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित हैं। इस पुस्तक को सात अध्याय में विभाजित किया गया हैं ।

प्रथम अध्याय में वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, शिक्षा के क्षेत्र में स्वयंसेवी संस्थाओं का योगदान, अध्ययन का औचित्य, अध्ययन के उद्देश्य, परिसीमांकन एवं शोध विधि पर प्रकाश डाला गया हैं।

द्वितीय अध्याय में शैक्षिक योगदान से संबन्धित कतिपय शोध अध्ययन का उल्लेख किया गया है।

तृतीय अध्याय में वनवासी कल्याण आश्रम के संस्थापक श्री बालासाहब देशपांडे जी के जीवन परिचय, जीवन दर्शन एवं शैक्षिक दर्शन का उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में वनवासी कल्याण आश्रम का परिचय, स्थापना ध्येय, योगदान, शैक्षिक योगदान, प्रकाशित समाचार पत्र एवं पुस्तकों का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में वनवासी कल्याण आश्रम के शैक्षिक प्रयासों का वर्णन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में वनवासी कल्याण आश्रम से सम्बद्ध सेवा समर्पण संस्थान का अवलोकन का सविस्तार वर्णन किया गया है।

सप्तम अध्याय में शोध के निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है ।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है, जब तक कि वह जन सामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह

पुस्तक निश्चित ही विद्यार्थियों में समाज के प्रति रुचि विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अत: यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम आभारी रहेंगे।

राजीव अग्रवाल

राकेश कुमार सिंह यादव

राजकुमारी

अनुक्रमणिका

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश है, जो धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शक रहा है| हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति एवं आदर्शों, परंपराओं का ही प्रभाव था, कि संपूर्ण विश्व में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रसार हुआ| हजारों वर्षों से मनुष्य ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ मनुष्य के चिंतन में भी वृद्धि हो रही है|

मानव समस्त प्राणियों में बौद्धिक रूप से श्रेष्ठ है, उनमें ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान की क्षुधा तृप्त करने की असीम अभिलाषा व क्षमता रहती है| मानव की उत्पत्ति के समय से ही यह प्रमाण मिले हैं, कि जितनी भी उन्नति और प्रगति मानव ने की है वह उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण ही संभव हो सकी है|

शिक्षा किसी राष्ट्र के नवनिर्माण एवं उनकी संस्कृति की वाहक होती है| शिक्षा के गौरवशाली अतीत पर ही उसके वर्तमान की दिशा निर्धारित होती है| शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है| जिसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार उसकी कार्यप्रणाली एवं जीवन व्रत में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है| शिक्षा न केवल पथ प्रदर्शक, ज्ञानवर्धक एवं प्रगति की द्योतक होती है बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय गरिमा को संरक्षित एवं संवर्धित करती है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करके उसके व्यवहार का परिमार्जन एवं परिष्करण किया जाता है|

शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन नहीं माना जा रहा परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं परंपराओं, मान्यताओं का परिचय न दें, तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती| आज भारत में फैली बुराइयों, सामाजिक कुरीतियों के कारण नैतिकता का ह्रास होता जा रहा है| इन समस्याओं को हल करने के लिए समाज को शिक्षित होना होगा और इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाना होगा|

समाज के उत्थान एवं उन्नति के लिए प्राचीन काल से ही धर्मगुरु, समाज सुधारकों के प्रयास सराहनीय रहे हैं| समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं ने समाज में शिक्षा के व्यापक प्रसार के लिए योगदान दिया है| जैसे समाज में स्त्री शिक्षा, बालकों की शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा आदि| इसी क्रम में एक और संस्थान समाज में वंचित और पिछड़े बच्चों की

शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहा है| अतः प्रस्तुत लघु शोध वर्तमान परिस्थिति में **वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान** के अध्ययन का एक प्रयास है|

1.1.1 शिक्षा:विकास की एक प्रक्रिया

हमारे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सबके लिए शिक्षा हमारे भौतिक और आध्यात्मिक विकास की बुनियादी आवश्यकता है| बालकों में कुछ जन्मजात शक्तियां रहती हैं| बालक इन्हीं जन्मजात शक्तियों के आधार पर व्यवहार करता है| शिक्षा बालक को सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है| यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है| जिससे राष्ट्रीय एकता पनपती है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्ति को अनुशासित करता है| इस प्रकार मनुष्य के अनुशासन के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है| शिक्षा के आधार पर ही अनुसंधान और विकास को संबल मिलता है, जो राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता की आधारशिला है| शिक्षा समाज के भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों से संबंधित होती है| शिक्षा वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है| इसी को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण की धुरी माना गया है| अत: यह कहना उचित है, कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है| समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है, जो हमारी संस्कृति, हमारे धर्म, मूल्यों से जुड़ी हो, क्योंकि धार्मिक शिक्षा के क्षेत्र में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है|

मनुष्य की शिक्षा उसे केवल परिस्थितियों के साथ सामंजस्य करना ही नहीं सिखाती है, वरन् उसे सामाजिक परिवर्तन करने और परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिए तैयार करती हैं| इस प्रकार शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों आदि में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन होता रहता है| डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने स्पष्ट कहा है कि, "शिक्षा को मनुष्य और समाज दोनों का निर्माण करना चाहिए|"

हमारी वर्तमान शिक्षा में सभी प्रकार की शिक्षा पर बल देना चाहिए जिसके परिणाम स्वरूप ही मानव का सर्वांगीण विकास संभव है|

1.2 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएं

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसे सन् 1835 ई० में लागू किया गया।

सन् 1835 ई० में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को तैयार करना है।इसके फलस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा के प्रयोग में लाने के बाद भी 1935 ई० में भारत की साक्षरता दस प्रतिशत के आँकड़े को भी पार नहीं कर पाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 13 प्रतिशत ही थी।

इस शिक्षा प्रणाली ने उच्च वर्गों को भारत के शेष समाज में पृथक् रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश समाज में बीसवीं सदी तक यह मानना था कि श्रमिक वर्ग के बच्चों को शिक्षित करने का तात्पर्य है उन्हें जीवन में अपने कार्य के लिए अयोग्य बना देना। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने निर्धन परिवारों के बच्चों के लिए भी इसी नीति का अनुपालन किया।

लगभग पिछले दो सौ वर्षों की भारतीय शिक्षा प्रणाली के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह शिक्षा नगर तथा उच्च वर्ग केंद्रित, श्रम तथा बौद्धिक कार्यों से रहित थी। इसकी बुराइयों को सर्वप्रथम गाँधी जी ने 1917 ई० में गुजरात एजुकेशन सोसायटी के सम्मेलन में उजागर किया तथा शिक्षा में मातृभाषा के स्थान और हिंदी के पक्ष को राष्ट्रीय स्तर पर तार्किक ढंग से रखा। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में शांति निकेतन, काशी विद्यापीठ आदि विद्यालयों में शिक्षा के प्रयोग को प्राथमिकता दी गई।

सन् 1944 ई० में देश में शिक्षा कानून पारित किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हमारे संविधान निर्माताओं तथा नीति-नियामकों ने राष्ट्र के पुनर्निर्माण, सामाजिक-आर्थिक विकास आदि क्षेत्रों में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया। इस मत की पुष्टि हमें राधाकृष्ण समिति (1949), कोठारी शिक्षा आयोग (1966) तथा नई शिक्षा नीति (1986) से मिलती है।शिक्षा के महत्व को समझते हुए भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए शिक्षण संस्थाओं व विभिन्न सरकारी अनुष्ठानों आदि में आरक्षण की व्यवस्था की। पिछड़ी जातियों को भी इन सुविधाओं के अंतर्गत लाने का प्रयास किया गया। स्वतंत्रता के बाद हमारी साक्षरता दर तथा शिक्षा संस्थाओं की संख्या में नि:संदेह वृद्धि हुई है परंतु अब भी 40 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निरक्षर है।

दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि स्वतंत्रता के बाद विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा व प्राविधिक शिक्षा का स्तर तो बढ़ा है परंतु प्राथमिक शिक्षा का आधार दुर्बल होता चला गया। शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्रीयता, चरित्र निर्माण व मानव संसाधन विकास के स्थान पर

मशीनीकरण रहा जिससे चिकित्सकीय तथा उच्च संस्थानों से उत्तीर्ण छात्रों में लगभग 40 प्रतिशत से भी अधिक छात्रों का देश से बाहर पलायन जारी रहा।

देश में प्रौढ़ शिक्षा और साक्षरता के नाम पर लूट-खसोट, प्राथमिक शिक्षा का दुर्बल आधार, उच्च शिक्षण संस्थानों का अपनी सशक्त भूमिका से अलग हटना तथा अध्यापकों का पेशेवर दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए एक नया संकट उत्पन्न कर रहा है।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नए चेहरे, निजीकरण तथा उदारीकरण की विचारधारा से शिक्षा को भी 'उत्पाद' की दृष्टि से देखा जाने लगा है जिसे बाजार में खरीदा-बेचा जाता है। इसके अतिरिक्त उदारीकरण के नाम पर राज्य भी अपने दायित्वों से विमुख हो रहे हैं।

इस प्रकार सामाजिक संरचना से वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संबंधों, पाठ्यक्रमों का गहन विश्लेषण तथा इसकी मूलभूत दुर्बलताओं का गंभीर रूप से विश्लेषण की चेष्टा न होने के कारण भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली आज भी संकटों के चक्रव्यूह में घिरी हुई है। प्रत्येक दस वर्षों में पाठ्य-पुस्तकें बदल दी जाती हैं लेकिन शिक्षा का मूलभूत स्वरूप परिवर्तित कर इसे रोजगारोन्मुखी बनाने की आवश्यकता है।

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली गैर-तकनीकी छात्र-छात्राओं की एक ऐसी फौज तैयार कर रही है जो अंततोगत्वा अपने परिवार व समाज पर बोझ बन कर रह जाती है। अत: शिक्षा को राष्ट्र निर्माण व चरित्र निर्माण से जोड़ने की नितांत आवश्यकता है।

1.2.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण

शिक्षा के बिना मानव पशु के समान है, क्योंकि शिक्षा ही सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में सहायक होती है| आजकल शहरों में तो क्या गांव में भी शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है| सरकारी स्कूलों में केवल निर्धन वर्ग के बच्चे ही पढ़ने के लिए आते हैं| क्योंकि निजी संस्थाओं में फीस के रूप में बड़ी रकम वसूली जाती है| जिसे केवल पैसे वाले ही अदा कर पाते हैं| आज अच्छी और उच्च शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है| निजी शिक्षण संस्थानों के संचालक मनमानी फीस वसूल कर रहा है| या यूं कहें शिक्षा का बाजार लगाकर लूट मचा रखा है| जहां एक ओर शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ फीस बढती जा रही है| आज के दौर में बढ़ती फीस के कारण मनपसंद स्कूल में प्रवेश लेना ही अपने आज बड़ी चुनौती है| फीस न होने के कारण कुछ लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजने में भी असमर्थ हैं| इसके साथ ही किताबें, वर्दी आदि खर्चे

भी बहुत हो गए हैं| स्कूल का व्यवसाय इतना लाभदेय हो गया है कि स्कूल वालों ने पुस्तक और ड्रेस का व्यापार करना भी शुरू कर दिया है|

आज एक से बढ़कर एक शिक्षण संस्थान नित जन्म ले रहे हैंजहां सिर्फ अमीर | कि इस अंधी संपन्नता और व्यवसायिकता |वर्ग के लोग ही शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं फूल रहा है पर शिक्षा का मूल उद्देश खत्-दौड़ में शिक्षा रूपी व्यवसाय तो जरूर फलम हो गया है|

1.2.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

आजकल स्कूल में जो शिक्षा दी जा रही है, वह वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में कहां तक उचित है, इस पर राजनीतिक प्रभाव कितने पड़ रहे हैंक्या इन राजनीतिक हस्तक्षेप के ? इनके भविष्य निर्माण ?कारण बालकों का अहित नहीं हो रहा हैमें बाधक नहीं हो रहा है, ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जो अनुत्तरित हैंजो भी सत्ताधारी पार्टियां ,हमारे देश में लोकतंत्र है | आती हैं, वह शिक्षा में दखल देती हैंश्यों की पूर्ति हेतु उसके अनुरूप अपनी वोटिंग उद्दे | पाठ्यक्रम बदल देती हैं| जिसका राष्ट्र निर्माण में कोई योगदान नहीं होताआज पाठ्यक्रम | पहले की तुलना |में देशप्रेम की भावना जगाने वाली कविताओं की जगह नहीं मिलती है में अध्यापकों को भी अन्य कामों में व्यस्त कर दिया गया है, जिससे वह उन्हीं कामों में उलझा रहता है|

पढ़ाने के काम को सरकार व अध्यापकों ने दोयम दर्जे का काम मान लिया है | बालकों को |इसका स्तर उठाना है |कुल मिलाकर इन सब से शिक्षा का स्तर गिर रहा है स्था बनाना इसे स्वायत्त सं |तो शिक्षा का राजनीतिकरण रोकना होगा ,संस्कारी बनाना है होगा, जिसमें किसी का हस्तक्षेप ना हो यही बालकों के व देश के हित में होगा|

1.2.3 शिक्षण व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण कि ओर है | इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक व शिक्षक भी जिम्मेदार है| पुरातन गुरु-शिष्य परंपरा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी| जिसमें छात्र अनुशासन में बंधकर गुरु का सम्मान करते थे, तथा शिक्षा पाते थे| परन्तु अब ऐसी स्थिति नही है, शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है| जिस कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है, छात्र को शिक्षक का डर नही है, अभिभावक भी इस बात पर ध्यान नही देते हैं| अभिभावक बच्चों को शिक्षकों के पास भेजते तो है पर जानने का प्रयास नही करते कि हमारा पुत्र या पुत्री पढ़ाई कर रहा है या नहीं| वर्तमान में शिक्षक छात्र संबंधों में कमी आई है,यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है| छात्रों में सम्मान देने

की भावना में कमी आई है| इसमें छात्र ही दोषी नहीं बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार है, देखने में आ रहा है कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं| पूर्व में गुरु शिष्य सम्बन्ध निःस्वार्थ था वर्तमान में यह स्वार्थपरक हो गया है| पैसा कमाने की सारी हदें शिक्षक पार कर चुके हैं जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है कि अभिभावक,गुरू,छात्र चिन्तन करें। दूसरे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुर्नप्रतिष्ठापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करना पड़ेगा।प्राचीन गुरू-शिष्य परंपरा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिन्तन के साथ राजनयिक को भी गंभीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना होगा।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढेर सारे कारण है। सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग क्लासेज व निजी स्कूल का उदय का कारण बना। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है न ही योग्य शिक्षकजिस कारण शिक्षा का बाजारीकरण होते चला गया जो अब चरम पर है। इस समानांतर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है। जिस कारण छात्र पढ़े या नहीं पढ़े पैसा आना चाहिए हॉबी हो गया है। जिसे हमें सुधारने के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता है।हम जबसे अपनी शिक्षा पद्धति में पश्चिमी प्रणाली को लाए हैं। शिक्षक-छात्र के बीच सम्मान देने की खाई बढ़ी है। पहले जहां प्रणाम का स्थान था अब गुड मॉर्निंग व गुड इवनिंग पर आ गया है। इसमें आप शिक्षा में किस प्रकार की आशा कर सकते हैं। हमें सबसे पहले प्राथमिक स्तर की शिक्षा पर खास ध्यान देना होगा। इसे संस्कृति से जोड़ना होगा। तभी आप देसी संस्कृति वाली शिक्षा की कल्पना कर सकते हैं|

1.2.4 शिक्षा की उपेक्षा

शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। इसमें भी प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से पंजाब के तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों में आधारभूत ढांचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पांच-पांच कक्षाएं संभाल रहे हैं। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है और अभिभावकों का भरपूर

शोषण कर रहे हैं। होशियारपुर के गांव कितना के सरकारी स्कूल की बात करें तो यहां चार वर्षो से कोई अध्यापक है ही नहीं। ऐसी खबरें हैरान करती हैं, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती हैं। यह स्थिति देश के संपन्न राज्यों में शुमार पंजाब की हो तो और आश्चर्य होता है। आखिर सरकार को स्कूलों में अध्यापक की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए। क्या सरकार इतनी लाचार है कि चार सालों में स्कूल में अध्यापक भी नहीं नियुक्त नहीं कर सकती। गांव कितना के स्कूल में एक अध्यापिका है भी तो वह तीन साल में तीसरी बार विदेश गई है। यहां बच्चों को पढ़ाने के लिए एक एनआरआइ ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिका की व्यवस्था की है। ऐसी स्थिति में यह तो तय है कि वहां पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित होगा ही। करीब पांच साल पहले केंद्र सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून बनाया था। इसका मकसद यही था कि हर बच्चे को शिक्षा मिले क्योंकि यह उसका अधिकार है। लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती। यह तो सरकारों को देखना होगा कि कानून के मुताबिक काम हो रहा है या नहीं। पंजाब सरकार को तत्काल ऐसे स्कूलों की पहचान कर वहां अध्यापकों की व्यवस्था करनी चाहिए और बार-बार विदेश जाने वाले अध्यापकों से सख्ती से पेश आना चाहिए क्योंकि शिक्षा की उपेक्षा देश के भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है।

1.2.5 भारतीय संस्कृति की उपेक्षा

शिक्षा की संस्था सभ्य समाज की एक जरूरी संस्था का स्थान ले चुकी है। अत: शिक्षा किसलिए हो या उसका क्या उद्देश्य हो, यह प्रश्न समाज और व्यक्ति के जीवन के संदर्भ में उठना स्वाभाविक है। देश में आजकल यह बात आम होने लगी है कि हमारी शिक्षा अपने परिवेश-संस्कृति से कटती जा रही है। जिस समाज या संस्कृति से शिक्षा का पोषण होता है और जिसके लिए वह प्रासंगिक होनी चाहिए वह एक दु:स्वप्न सरीखी होती जा रही है। इन सबके बीच जो पढ़-लिख जाता है वह मानो एक बड़ी यांत्रिक व्यवस्था के उपकरण के रूप में ढल जाता है। प्रतिस्पर्धा की दुनिया में उसका उद्देश्य सफलता, उपलब्धि और भौतिक प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ने तक सीमित हो रहा है। इस तरह यह शिक्षार्थी के मानस को संकुचित बनाने का काम कर रही है। एक ओर तो विश्वस्तरीय शिक्षा देने का संकल्प लिया जाता है तो दूसरी ओर सर्वत्र एक ही ढर्रे पर पढ़ाई करने की कवायद भी जारी है।

आज प्रचलित शिक्षा मनुष्य को स्वचालित रोबोट बनाने पर जोर देती है। इस शिक्षा से निकलने वाले होनहार युवाओं की स्थिति विचित्र हो रही है। जिस सीढ़ी के सहारे चढ़कर वे ऊपर पहुंचते हैं उस सीढ़ी से बेझिझक अलग हो जाते हैं। वे उस भूमि से अलग हो जाते हैं जिसने जीवन दिया। यह शिक्षा सांस्कृतिक विचार, विश्वास, सहयोग, सहनशीलता आदि की कीमत पर दी जा रही है। लिहाजा उनमें सामाजिक सृजनात्मकता और निजी लाभ के आगे किसी तरह की सामाजिक सकारात्मकता विरल होती जा रही है।यदि हम स्कूली शिक्षा को लें जो शिक्षा का प्रवेश द्वार है तो पाते हैं कि भारत में पहले कई तरह के विद्यालय चलते रहे हैं। यहां प्राचीन काल में गुरुकुल, पाठशाला और मदरसा मौजूद थे। यहां आने के बाद अंग्रेज अधिकारियों ने प्रारंभिक शिक्षा के संबंध में जो रपटें लिखीं वे आश्चर्यजनक रूप से इसकी अच्छी स्थिति प्रदर्शित करती हैं। उनकी नजरों में तब यहां की शिक्षा संस्कृति से जुड़ी थी। बाद के दिनों में कोठारी शिक्षा आयोग द्वारा संस्कृति पर ध्यान देने की बात की गई थी। उसने इस बात पर जोर दिया था कि कार्यक्षेत्र, शिक्षा, घर, परिवार, व्यक्ति और समाज के बीच कोई द्वंद्व नहीं होना चाहिए।

महात्मा गांधी ने भी 'नई तालीम' का विचार दिया था जिसमें शरीर, हाथ, बुद्धि सबका संतुलन होता है और इसके लिए उन्होंने स्थानीय संसाधन के उपयोग का सुझाव दिया था। इसमें निरी बौद्धिकता पर अतिरिक्त बल न देकर शरीर, मन, आत्मा सब पर ध्यान देने की बात कही गई। इसके अंतर्गत स्वावलंबन, देशभक्ति, आत्म-संपन्नता और संयम जैसे जीवन मूल्यों पर बल देना प्रस्तावित है। प्राथमिक शिक्षा से मोहभंग के साथ कई विकल्पों पर काम शुरू हुआ। गुरुदेव रवींद्रनाथ ने शांतिनिकेतन के पास श्रीनिकेतन बनाया था। रुक्मिणी देवी अरुंडेल, एनी बेसेंट और जे कृष्णमूर्ति ने भी अलग-अलग प्रयास किए। इन सब प्रयासों में जीवन कौशल और कला पर बल दिया गया ताकि छात्रों को आस-पास की दुनिया से जुड़ने का भी अवसर मिले। उनका मानना था कि समग्र व्यक्तित्व के विकास के लिए प्राचीन और नए हुनर भी आने चाहिए जो संस्कृति विशिष्ट होते हैं।

शिक्षा के मूल्य की अभिव्यक्ति मूर्त और अमूर्त, दोनों माध्यमों से होती है। समाज और समुदाय व्यक्ति से ऊपर होते हैं। भारत की समृद्ध वाचिक परंपरा बड़ी प्राचीन है। आज जो शिक्षा (मस्तिष्क!) विदेश से लाकर देश में प्रत्यारोपित की जा रही है वह एक हद तक भारतीय मूल्यों को जड़ से विस्थापित कर रही है। आर्थिक संपन्नता से सांस्कृतिक विपन्नता की भरपाई नहीं हो सकती। नैतिक मूल्यों का अभाव, तनाव, द्वंद्व,

हिंसा और असहनशीलता तो किसी भी तरह ग्राह्य नहीं है। मनुष्यता के विकास के लिए संस्कृति आधारित शिक्षा के अतिरिक्त और कोई साधन उपलब्ध नहीं है।

भारतीय संस्कृति की दृष्टि में अच्छी दुनिया वह है जिसमें बहुलता, पारस्परिकता और सह अस्तित्व हों, पर हम इसे छोड़कर अंग्रेजी पर अधिकार करने चले और उसी ने हम पर अधिकार जमा लिया। सांस्कृतिक क्षति के चलते हम बोलने और सोचने को लेकर विभाजित व्यक्तित्व वाले होते जा रहे हैं। अर्थात बाहर से ग्रहण किया या लिया, पर अंदर जो मौजूद है वह गया भी नहीं। अब द्वंद्व और दुविधा के साथ किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे हैं। औपनिवेशिक शक्तियों की भाषा हमारा माध्यम हो गई है। धर्म, भाषा, पशु, पक्षी, प्रतिमा, पुरातत्व, कला, राजनीति और अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्रों में भारतीय अपनी शिक्षा से अपरिचित होते जा रहे हैं।

हमें अपनी संस्कृति की भी चिंता नहीं है। विद्यालयों में प्रक्रिया के स्तर पर अध्यापक और सहपाठी के साथ सहयोग कैसे स्थापित किया जाए यह आज की कठिन चुनौती बन गई है। आज शिक्षा एक खास तरह का व्यापार बनती जा रही है। विद्यालयों के साथ समाज का रिश्ता नहीं बन रहा है और जन भागीदारी बहुत सीमित हो गई है। आधुनिकता और यहां की प्राचीन ज्ञान परंपरा के बीच आज तक सामंजस्य नहीं बन पाया है। सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति तो हो रही है, पर इन सबके बीच इंसान खो गया है।

आज बुद्ध, महावीर, ईसा, महात्मा गांधी के विचार कहां हैं? हम किधर जा रहे हैं? आज यह विचारणीय सवाल है। हमें भौतिकता के मिथक तोड़ने होंगे। मशीनीकरण की होड़ से बचना होगा। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में स्थित सामाजिक चेतना, ब्रह्मांडीय चेतना ही आधुनिक आत्मकेंद्रित उपभोक्तावाद की समस्या का समाधान कर सकती है। अहं का प्रकृति पर विजय की जगह प्रकृति और समाज के बीच संबंध स्थापित करने से ही स्वराज, स्वदेशी और सर्वोदय के विचार जीवित होंगे। शांति की संस्कृति का विकास नैतिक अनुशासन से ही आ सकेगा। और तभी बच्चे में श्रेष्ठ का आविष्कार करने की ललक और स्वावलंबी जीवन व्यतीत करने की इच्छा पनप सकेगी। तभी पूर्ण सामाजिक विकास और धार्मिक समानता भी आ पाएगी।

दरअसल विचारों का विकास और उनकी समाज में उपस्थिति के कई आधार होते हैं। प्राय: माना जाता है कि आधुनिकता का विचार पश्चिम से भारत की ओर आगे

बढ़ा। यहां की अपनी आधुनिकता को औपनिवेशिक आधुनिकता ने नकारात्मक ढंग से प्रभावित किया। यहां एक तरह की संकर या मिश्रित आधुनिकता का आरंभ हुआ। यहां की आधुनिकता पश्चिमी आधुनिकता से जटिल रूप में जुड़ी और फिर शिक्षा का सांस्कृतिक विमर्श भी बाधित हुआ। जाहिर है शिक्षा का प्रयोजन भविष्य के लिए तैयारी और नियोजन से जुड़ा है। इसलिए इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। ऐसे में जरूरी है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में समय के साथ आ गई इन खामियों को दूर किया जाए।

1.3 शिक्षा के क्षेत्र में स्वयंसेवी संस्थाओं का योगदान

स्वैच्छिक संगठन व्यक्तियों का एक ऐसा समूह होता है जिन्होंने स्वयं को विधि सम्मत निकाय में संगठित कर लिया है ताकि संगठित कार्यक्रम के माध्यम से सामाजिक सेवाएं प्रदान कर सकें। गैर सरकारी संगठन राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विद्यमान है। सरकार की नीतियां जहां नहीं पहुंच पाती वहां गैर सरकारी संगठन के सदस्य पहुंचकर कार्य करते हैं जिसमें जनता का हित होता है। गैर सरकारी संगठन निस्वार्थ सेवा हेतु एकत्र हुए लोगों का समूह है जो कुछ व्यक्ति मिलकर खास उद्देश्य के लिए संगठन बनाते हैं। इसमें व्यक्तिगत लाभ न होकर सामाजिक विकास का उद्देश्य होता है। इनका मुख्य लक्ष्य जरूरतमंदों की सेवा करना होता है। मूल रूप से एक गैर सरकारी संगठन की परिकल्पना एक ऐसी संस्था के रूप में की जाती है कि जिस की संरचना कुछ व्यक्तियों की समिति ने मिलकर की है। इसका एक निश्चित नाम और उद्देश्य होता है। यह संगठन पंजीकृत भी हो सकते हैं और नहीं भी। परंतु जब यह संगठन कोई लोक परोपकारी या अन्य सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बाहर से वित्तीय सहायता प्राप्त करना चाहता है तो ध्यान देने वाली संस्थाएं अंतरराष्ट्रीय या राष्ट्रीय निश्चित रूप से उस संगठन से अपेक्षा करेंगे कि वे अपना एक वैध स्वरूप धारण करें। इन्हें वैध स्वरूप तभी मिल सकता है जब व्यक्तियों के समूह को किसी लागू कानून के अंतर्गत पंजीकृत कर लिया हो। शिक्षा के विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। शैक्षणिक विकास के लिए भारत सरकार द्वारा समयसमय पर अनेक नीतियां और कार्यक्रम बनाए जा रहे हैं ताकि - साक्षर बने और देश का विकास ह सभीो। आज सरकार ने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए गैर सरकारी संगठन को भी जिम्मेवारी दी गई है क्योंकि दूरदराज वाले क्षेत्रों में सरकारी नीतियां नहीं पहुंच पा रही हैं ताकि लोगों को उनके अधिकारों व रोजगार के संबंध में जागरूक किया जा सके। शिक्षा के क्षेत्र में स्वयंसेवी संगठन की भूमिका को बढ़ाने के लिए सुझाव दिए गए हैं और गैर सरकारी संगठनों का वर्णन किया गया है।

कुछ महत्वपूर्ण स्वयमसेवी संगठन

स्वयमसेवी संगठनों ने जन केंद्रित योजनाओं जैसे- स्वास्थ्य सेवाओं, परिवार नियोजन, पर्यावरण संरक्षण और अनौपचारिक शिक्षा के विकास में सराहनीय कार्य किए हैं| प्रजातंत्र में स्वयमसेवी संगठनों को अवसर प्रदान किए जाते हैं| भारत में भी स्वयमसेवी संगठनों ने अपने सेवाकार्यों से लोगों की सेवा की है| जन शिक्षा के क्षेत्र में स्वयमसेवी संगठनों का योगदान काफी सराहनीय रहा है|

1.3.1 जन सेवा संस्थान

- यह संगठन जन सेवा संस्थान पिछले10 वर्षों से अनाथ व ग़रीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा व बस सेवा प्रदान कर रहा है।
- अनाथ बच्चों के लिए समय-समय पर स्वास्थ्य जांच सम्बन्धी कैम्प लगवाना।
- गरीब बच्चों को रोजगार दिलाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना।

अन्य कार्य

- विधवा एवं गरीब परिवारों की कन्याओं का आश्रम में विवाह आयोजित करवाना एवं आर्थिक सहायता प्रदान करना।
- रैन बसेरों का संचालन करना।
- लावारिस हालत में रोगियों की देखभाल करना। बेसहारा लोगों को आश्रम में रखना।
- विधवा व गरीब महिलाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए सिलाई केंद्रों का संचालन।

1.3.2 सर्च

सर्च प्रौढ़ शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। संस्था द्वारा 15 वर्ष से अधिक आयु वाले सभी निरक्षरों को साक्षर बनाने के लिए शिक्षण सामग्री तैयार की जाती है तथा चुने हुए केंद्रों पर साक्षरता कक्षाओं के माध्यम से शिक्षार्थियों को अक्षर ज्ञान दिया जाता है। शिक्षण पद्धति विकसित करना, स्वयं सेवी अध्यापकों व कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना, निरक्षरों को प्रेरित करना व इस कार्य में समुदाय को शामिल करने के लिए सघन वातावरण निर्माण गतिविधियों का आयोजन करना संस्था द्वारा किए जाने वाले अन्य महत्वपूर्ण कार्य है। समय-समय पर कक्षाओं का सहयोगी गतिविधियों की मॉनिटरिंग व शोध कार्य भी संस्था द्वारा किया जाता है। नव साक्षरों के अक्षर कौशल को बढ़ाने के लिए 'नवसाक्षर साहित्य' तैयार किया गया है। इसके अलावा समय-समय पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का भी आयोजन करवाते हैं। इसका मुख्य कार्य

समाज के लोगों को शिक्षा एवं संवैधानिक अधिकारों की जानकारी देना और उन्हें समय-समय पर नए नए कानून एवं अधिकारों के बारे में जागरूक करना। सर्च गैर सरकारी संगठन क्षेत्र के विकास में अच्छा काम कर रहा है।

1.3.3 एम. टी.एफ.सी. (देश का भविष्य बनाना)

इस गैर सरकारी संगठन का मुख्य उद्देश्य अनपढ़ता, गरीबी की मार झेल रहे बच्चों के जीवन में शिक्षा का प्रकाश फैलाना ही संस्था का मुख्य कार्य रहा है। इसके अलावा यह संस्थान बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ व्यवसायिक ट्रेनिंग देना, बच्चों के मानसिक विकास के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे खेल, वाद विवाद, कलाकृति, निबंध लेखन, स्वास्थ्य संबंधी कैंपों का आयोजन करना, समाज के लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक करना, बच्चों में आध्यात्मिक व नैतिकता व्यवहार लाना, प्राकृतिक आपदाओं के समय लोगों की सहायता करना भी इस संस्था का सराहनीय काम रहा है।

1.3.4 ज्ञान विज्ञान समिति

यह संगठन देश के सभी हिस्सों में शिक्षा की अलख जगा रहा है तथा कार्यकर्ता समय-समय पर अनेक स्थानों पर शिक्षा अधिकार उत्सव का आयोजन करके गांव के सभी बच्चों का स्कूल में नामांकन कराने में भूमिका निभा रहे हैं। साथ ही शिक्षा अधिकार कानून के क्रियान्वयन की हर स्तर पर निगरानी और सहयोग करते हैं तथा शिक्षा अधिकार कानून पर विचार गोष्ठी और कार्यशाला का आयोजन करवाते हैं। अत: यह संगठन शिक्षा के लिए प्रभावित तरीके से कार्य कर रहा है।

- इस संस्था का देश के संपूर्ण राज्य या उसके किसी भाग में निरक्षरता उन्मूलन से बने साक्षर समूहों का गठन करना है।
- प्रदेश की संस्कृति को बनाए रखने के लिए बच्चों के मानसिक विकास हेतु पुस्तकों का प्रकाशन करना ताकि बच्चों को इन्हें पढ़ने के बाद संस्कृति के प्रति अभिप्रेरणा मिले।
- समाज के वर्तमान मामलों, लोगों की रचनात्मक भागीदारी को बढ़ावा देकर लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता को मजबूती प्रदान करना।
- यह संस्थान कामकाजी बच्चों को संगठन बनाने पर जोर देती है। इसका मानना है कि बाल श्रम प्रथा को समाप्त करने के लिए उनके परिवार की वयस्कों को पूर्ण रोजगार देना होगा।

1.3.5 आम जन शिक्षण संस्थान

- इस संस्था का मुख्य उद्देश्य लोगों को रोजगार दिलाने के लिए समय समय संपूर्ण राज्य या उसकी विभिन्न भागों में व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु कैंपों का आयोजन करना है।
- समाज के लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए समय-समय पर जागरूकता कैंपों को आयोजित करना।
- गरीब व अनाथ बच्चों के लिए निशुल्क कंप्यूटर कोर्स संचालित करना।
- महिलाओं को आत्मस्वालंबी बनाने हेतु सिलाई, कढ़ाई, आशा वर्कर,ब्यूटी पार्लर,आंगनवाड़ी वर्कर आदि का प्रशिक्षण देना।

1.3.6 दीया फाउंडेशन

यह संगठन गरीब व अनाथ बच्चों की शिक्षा के लिए प्रयासरत है। यह संस्थान समय-समय नाटकों के माध्यम से कैंप लगाकर लोगों को बीमारियों के बारे में जागरूक करता है। बाल मजदूरी पर रोक लगाना बच्चों के माता-पिता को शिक्षा के प्रति जागरूक करना इस संस्थान का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इस संस्थान का मुख्य कार्य बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना, आवासीय सुविधा एवं व्यवसाय प्रशिक्षण भी देना है। दिया फाउंडेशन एक गैर सरकारी संगठन है।

1.3.7 प्रिया

प्रिया अंतरराष्ट्रीय संस्था के नाम से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करती है। 2010 से मानव संसाधन और सामाजिक विकास के लिए प्रयासरत है। इसका उद्देश्य थी बच्चों को अनौपचारिक शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी बनाना है जिससे वह समाज में सम्मान की जिंदगी जी सकें। शुरू में यह संस्था रद्दी चुने वाले बच्चों तक सीमित थी किंतु वर्तमान में यह संस्थान अति निम्न आय वाले बच्चों को भी शिक्षित कर रही है। यह संगठन समय-समय पर कानूनी सहायता का कार्यशाला का आयोजन करवाता है ताकि समाज के लोग अपनी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सके। यह संस्थान सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग के बच्चों को 3 महीने 6 महीने के व्यवसायिक प्रशिक्षण देती है।

1.3.8 निरंतर

यह संगठन लैंगिक शिक्षा के लिए प्रयासरत है। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना व शिक्षा से संबंधित कैंपों का आयोजन करना है। लिंग,भेद, जात-पात, नस्ल-भाषा के आधार पर ऊंच-नीच की भावना को जड़ से खत्म करने का मुख्य उद्देश्य है। अनाथ बच्चों का सामाजिक उत्थान करना तथा उनके शिक्षा और चेतना के स्तर को ऊंचा उठाने का प्रयास करना व समाज में फैली बुराइयों की रोकथाम के अलावा यह संस्थान बालिकाओं के यौन उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठा रहा है। अध्ययन के दौरान पाया गया कि यह संगठन शिक्षा के साथ-साथ समाज के सुधार के लिए भी प्रयासरत है।

1.3.9 जनोदय एकता समिति

यह संस्था गरीब व अनाथ बच्चों को शिक्षित करने का कार्य कर रही है। समाज के लोगों को कानूनी व एवं संवैधानिक अधिकारों की जानकारी हेतु जागरूकता कैंप लगाना और उन्हें समय-समय पर नए नए कानून एवं अधिकारों के बारे में जागरूक करती है। यह संस्थान सड़क के किनारे रेहड़ी लगाने वाले के वालों के बच्चों को अक्षर ज्ञान, स्वास्थ्य, समाज में व्याप्त बुराइयों पर रोक लगाने आदि में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। जनोदय एकता समिति शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अच्छा कार्य कर रही है|

1.3.10 प्रथम

प्रायःस्वयंसेवी संस्थाएं किसी एक व्यक्ति या छोटे समूह के द्वरा स्थापित होती हैं| प्रथम शायद पहली ऐसी संस्था है जो मुंबई के म्यूनिसपल कमिश्नर तथा कई देशों के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा निर्मित चैरिटेबल ट्रस्ट है| इसकी स्थापना १९९४ में की गयी थी| अपने प्रारंभिक वर्षों में प्रथम ने मुंबई शहर की मलिन बस्तियों में पूर्व विद्यालयी शिक्षा देनी प्रारंभ की थी| इस कार्य हेतु उन्होंने कोई पूर्व निर्धारित स्थान नही चुना अपितु कहीं पर भी घर में, मंदिर में, दफ्तरों में जो स्थान मिला वहीं पर बच्चों को एकत्रित करके शिक्षा देनी प्रारंभ की| इस कार्य हेतु कार्यकर्ताओं को चुना एवं प्रशिक्षित किया गया| देखते ही देखते प्रथम बालकड़ियों की संख्या बढ़ती चली गयी बाद में पूर्व विद्यालयी शिक्षा के साथ-साथ विद्यालय जाने वाले सभी बच्चे तथा वे बच्चे जो शैक्षिक रूप से पिछड़ रहे थे तथा ड्रॉपआउट हो सकते थे उन्हें भी इस योजना में सम्मिलित किया गया| इन बच्चों के माता-पिता प्रायः अशिक्षित थे अतः उन्हें भी शिक्षित करने के लिए बालसखी कार्यक्रम प्रारंभ किया गया| इन विद्यालयों का उद्देश्य बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा (औपचारिक शिक्षा) में शामिल करना था|

1.3.11 वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान"

बाला साहब जी महाजन जी द्वारा स्थापित भारत में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन हैं| जिसकी स्थापना 26 दिसम्बर1952 में हुई| बाला साहब जी की भारत में और विदेश में अनेक शाखाएं हैं| यह संस्थान समाज में वंचित, पिछड़े, वृद्धों और प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों की शिक्षा, आवास आदि की मदद करता है| प्रबोधिनी नेतृत्त्व क्षमता के विकास में अद्वितीय कार्य कर रहे हैं| बाला साहब जी में आधुनिकता के साथ-साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुसार समाज के हर वर्ग सामान्य, वंचित, पिछड़े बच्चों के लिए शिक्षा की मदद करता है, जिसमें उनको अपने सपने साकार करने में मदद मिलती है|

1.4 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में जीवन चलने वाली प्रक्रिया है| किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है| अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है| प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति एवं नैतिकता से परिपूर्ण होती है| जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान युग की ओर बढ़ते गए शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति और नैतिकता का लोप होता गया| विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए, शिक्षा का व्यवसायीकरण, राजनीतिकरण हुआ|परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती|

वर्तमान समय में शिक्षा का धर्म से विमुखीकरण हुआ है और शिक्षा व्यवस्था में अनेक समस्याएं सामने आ रही हैं| शिक्षा के व्यवसायीकरण के बाद समाज में आर्थिक संपन्न लोग ही अपने बच्चों को शिक्षा दिला रहे हैं तथा गरीब, पिछड़े ,असहाय बच्चे आज भी अच्छी शिक्षा के लिए वंचित हैं| इन वंचित बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने व उनकी हर संभव मदद को कुछ धार्मिक सामाजिक संस्थायें प्रयास कर रही हैं|

आज की शिक्षा व्यवस्था में इन अनंत समस्याओं को देखते हुए शोधकर्ता के मन में धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य करने का विचार आया ताकि धार्मिक, सांस्क्रतिक, नैतिक शिक्षा तथा उनके क्षेत्र का पता लगाया जा सके एवं भविष्य में सुधार हेतु सुझाव दिए जा सकें|

1.5 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए निम्न समस्या का चुनाव किया गया

"वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान"

1.6 समस्या कथन में निहित शब्दों की व्याख्या

"वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान"

यह आश्रम परमपूज्य श्री बाला साहब महाजन जी के द्वारा स्थापित किया गया था| यह संस्थान मुख्यतया गरीब एवं पिछड़े हुए लोगों के लिए कार्य करता है| इस संस्थान का उद्देश्य लोगों में नेतृत्त्व क्षमता का विकास करना भी है|

1.7 अध्ययन का औचित्य

हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था पाश्चात्य शिक्षा की ओर बढ़ रही है| वर्तमान शिक्षा प्रणाली मैकाले की शिक्षा नीति और वुड के घोषणा पत्र पर आधारित है| जिसके कारण हमारी शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति सभ्यता और नैतिकता की को भूलती जा रही है| हम लोग शिक्षित तो हो रहे हैं परंतु संस्कारित और धार्मिक नहीं| इसी तरह आने वाली पीढ़ी भी शिक्षित तो हो जाएगी परंतु उसमें संस्कृति और नैतिकता का अभाव रहे|

अध्ययन का औचित्य यह जानना है कि "बाला साहब" संस्था द्वारा किए जा रहे शैक्षिक प्रयासों से समाज में शिक्षा की स्थिति में क्या प्रभाव है| संस्था ने किस स्थित पर समाज में वंचित वर्ग के असहाय, अनाथ बालकों को शिक्षित करने में सफलता प्राप्त की और किस स्थिति तक असफल रही| यह जानना महत्त्व को बढ़ा देता है कि "वीजेएम" द्वारा संचालित शैक्षिक कार्यक्रमों से समाज में क्या सुधार हुए? और विकास की क्या संभावनाएं हैं? तथा इस संबंध में सुझाव प्रस्तुत करना अध्ययन का औचित्य है |

इस अध्ययन में समाज में लोगों को"वीजेएम" के शैक्षिक योगदान के बारे में जानकारी मिलेगी और वंचित, आनाथ, असहाय बच्चों की अच्छी शिक्षा का लाभ मिलेगा|

1.8 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रबंध में उद्देश्य निम्नलिखित है-

❖ बाला साहब जी के शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना|

❖ बाला साहब जी के शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन करना|

❖ बाला साहब जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना|

❖ बाला साहब जी के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन करना|

❖ बाला साहब जी के शैक्षिक क्रिया कलापों का अध्ययन करना|

❖ बाला साहब जी के शैक्षिक विचारों के अंतर्गत अनुशासन, विद्यालय अवधि आदि का अध्ययन करना|

1.9 अध्ययन का परिसीमांकन

प्रत्येक शोध को एक सीमा होती है| उसी सीमा तक उसके निष्कर्ष वैध होते हैं| प्रस्तावित शोध की निम्न सीमाएं हैं-

❖ प्रस्तावित शोध में बाला साहब के शैक्षिक योगदान को सम्मिलित किया जाएगा|

❖ प्रस्तुत शोध बाला साहब के शैक्षिक क्रिया कलापों एवं भौतिक सुविधाओं तक ही सीमित रहेगा|

1.10 अध्ययन विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसन्धान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारु रूप से परिचालित करने का ढंग होती है| मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया है जिसका प्रयोग समस्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है|

प्रस्तुत लघु शोध का उद्देश्य "बाला साहब का शैक्षिक योगदान" का अध्ययन करना है| अतः प्रस्तुत अध्ययन की समस्या को देखते हुए अनुसंधान विधि के रूप में विवरणात्मक अध्ययन विधि एवं व्यक्तिगत अध्ययन विधि का चयन किया है|

1.10.1 विवरणात्मक अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में विवरणात्मक अध्ययन का प्रयोग किया गया है| इसके द्वारा किसी घटना, परिस्थिति, संगठन आदि के लक्षणों का विशुद्ध अध्ययन किया जाता है| इसका उद्देश्य दी हुई परिस्थिति की विशेषताओं का वर्णन करना होता है| जिससे अध्ययन के उद्देश्य स्पष्ट होते हैं तथा निश्चित होता है किकिन तत्वों का अध्ययन करना है

|

1.10.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है| प्राचीन काल में शिक्षा प्राकृतिक वातावरण में गुरुकुल में धार्मिक, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के आधार पर दी जाती थी| शिक्षा का उद्देश समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है| वर्तमान में शिक्षा प्रणाली मैकाले की शिक्षा पद्धति पर आधारित है जिसका उद्देश्य बौद्धिक विकास करना है तथा धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों का लोप होता जा रहा है| आज की शिक्षा इतनी पूर्ति करने में सक्षम नहीं है|

शिक्षा के क्षेत्र में व्यवसायीकरण होने के कारण निजी शिक्षण संस्थानों के आने से शिक्षा का उद्देश बदल गया है| शिक्षा अब धन कमाने का एक जरिया बन गई है| जिसके चलते समाज में कई तरह की समस्याएं उत्पन्न हो रही है| अतः समाज का हर वर्ग का व्यक्ति (वंचित, पिछड़ा, अनाथ, असहाय आदि) आसानी से शिक्षा नहीं ग्रहण कर पा रहा है|

अत: शोधकर्ता ने इस संदर्भ में प्रमोद महाजन जी द्वारा स्थापित संस्था बाला साहब का चुनाव किया, जो कि वर्तमान समाज में अव्यवस्थित शिक्षा व्यवस्था को धार्मिक, संस्कृति और नैतिकता से पूर्ण बनाते हुए शिक्षा को समाज के वंचित, असहाय अनाथ आदि लोगों तक पहुंचाने का प्रयास कर रही है| राष्ट्रहित में देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने में समाज के हर वर्ग का हाथ है| अतः हम एक भी वर्ग को छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकते|

अत: बच्चे देश का भविष्य होते हैं| यदि उन्हें समय पर सही शिक्षा और निर्देश मिल मिलता रहे, तो देश प्रगति करता रहेगा|

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

किसी भी प्रकार के अध्ययन में चाहे वह वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सामाजिक या मनोवैज्ञानिक क्षेत्र की समस्याओं के अध्ययन से संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण अनिवार्य हो जाता है| किसी भी कार्य की अच्छी सफलता के लिए शोधकर्ता को संबंधित साहित्य एवं सामग्री का होना आवश्यक है| प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान में चाहे वह भौतिक विज्ञानं क्षेत्र का हो अथवा सामाजिक विज्ञान का साहित्य का सर्वेक्षण अनिवार्य एवं प्रारंभिक कदम है|

संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन पुस्तकों, ज्ञानकोष, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंध एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन, प्राकल्पना निर्माण, अध्याय का प्रारूप तैयार करने एवं कार्य को गति देने में सहायता मिल सकती है|

जे.डब्ल्यू.बेस्ट. के अनुसार "संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधान के लिए अत्यंत आवश्यक है यद्यपि इस कार्य में समय अधिक लगता है| संबंधित समस्या के साहित्य का ज्ञान होने पर यह जानने में सहायता मिलती है कि क्या ज्ञात होना शेष है? तथा कौन सी समस्या का समाधान अभी शेष है|"

अनुसन्धान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो उसका लक्ष्य सम्बंधित क्षेत्र में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है| मानव की इसी प्रकृति के फलस्वरूप ज्ञान की अखिल धारा प्रवाहित हुई है|

किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धांतों से भलीभांति अवगत होना चाहिए| सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बंधित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है या नहीं|

पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं ने विषय विशेष को किस उद्देश्य से एवं कितनी गहनता से अध्ययन किया है क्या वर्तमान में उस पर कार्य होना अपेक्षित है, इन सब का ज्ञान शोधकर्ताओं को सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से ही हो सकता है|

वेस्ट जे. डब्ल्यू. के शब्दों में-“जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्राप्त किया गया ज्ञान हमें अध्ययन करने व ज्ञान प्राप्त करने का आधार प्रदान करता है इसलिए यह अनुसन्धान प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण है|”

सन्दर्भ साहित्य का जितना अधिक ज्ञान प्राप्त किया जाये उतना ही विषय को समझने में सहायता मिलती है| पूर्व शोध साहित्य के आधार पर ही शोधकर्ता अपने शोध का विषय, क्षेत्र, सीमा व विधि का निर्माण करता है| पूर्व में हुए शोध अध्ययनो के आधार उसे भावी शोध में परिणाम ज्ञात करने में भी सहायता मिलती है जहाँ शोधकर्ता के लिए नवीन मार्ग नवीन दिशा की खोज का महत्व है वहीं उसे इस मार्ग पर विकास पाने व सफलता प्राप्त करने के लिए पूर्व में हुए शोध साहित्य का ज्ञान होना आवश्यक है|

2.2 शैक्षिक योगदान से सम्बंधित कतिपय शोध अध्ययन

1. सत्येन्द्र गुप्ता (2005) ने अपने शोधग्रंथ “बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन” के विश्लेषणात्मक अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं ने बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में संख्यात्मक रूप से तीव्र गति से प्रगति की है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थान बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के समस्त जिला मुख्यालयों सहित तहसीलों, कस्बों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करने का कार्य कर रहें हैं|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थान बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा पर लगभग समान रूप से ध्यान दे रहें हैं|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं ने पिछले एक दशक में तेजी से कार्य हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएटस्तर तक अपने विद्यालयों का उन्नयन किया है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाएं स्वयं के स्वामित्व वाले पक्के एवं कंक्रीट भवनों में समस्त छात्रों के बैठने के लिए कक्ष, कश्ठोप्करण एवं शौचालयों कि व्यवस्था किये हुए हैं|
- बुन्देलखण्ड क्षेत्र कि जनसँख्या एवं शिक्षा की मांग कि तुलना में इन संस्थाओं कि संख्या एवं छात्र धारणाअभी कम है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में छात्रों के नामांकन कि दर में सतत रूप से वृद्धि हो रही है|

- बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले छात्रों का अनुपात अधिक है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में छात्र नामांकन वृद्धि के अनुपात में शिक्षकों (आचार्यों) कि संख्या में वृद्धि संतोषजनक ही है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में आचार्य-छात्र अनुपात मानकों के अनुरूप है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में कक्षा अष्टम में छात्रों का उत्तीर्ण प्रतिशत सदैव शत प्रतिशत कि श्रेणी का रहा है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में छात्रों का माध्यमिक शिक्षा परिषद,उत्तर प्रदेश कि हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट परीक्षाओं में प्रदर्शन छात्रों के उत्तीर्ण प्रतिशत के आधार पर, सदैव अति उच्च श्रेणी का रहा है|
- बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं के अध्ययनरत छात्र माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश की प्रदेश स्तरीय मेधावी छात्र सूची में अपना स्थान निरंतर बना रहें है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में छात्रों के लिए कम्प्यूटर की शिक्षा की व्यवस्था उपलब्ध है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में छात्रों के मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु समुचित मात्रा में संसाधन उपलब्ध है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थान स्ववित्त पोषित श्रेणी के हैं एवं छात्रों से प्राप्त होने वाला शुल्क ही इनकी आय का नियमित स्त्रोत है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में आचार्यों का वेतनमान न तो सरकारी वेतन के अनुरूप है न ही इन्हें "त्रिलाभ" प्राप्त हो रहें है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थान छात्रों के प्रवेश हेतु पारदर्शी प्रक्रियाओं का पालन कर रहे हैं|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थान बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में 'उत्तर प्रदेश शासन' के पाठ्यक्रम का परिचालन कर रहे है|
- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाएं उत्तर प्रदेश शासन के स्ववित्तपोषित विद्यालय के नियमों के अनुरूप बुन्देलखण्ड क्षेत्र में संचालित की जा रहीं है|

2. रेनू सिंह (२००८) ने अपने शोध ग्रन्थ “ भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान   विशेष रूप से दलितों के उत्थान में ” के विश्लेषणात्मक अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए-

- शाहू जी महाराज जीवन की आवश्यकता आधुनिक आवश्यकताओं एवं वास्तविकता से भलीभांति जागरूक थे इसलिए द्वारा शिक्षा के द्वारा बुद्धि अस्तित्व सरी आत्मा के साथ ही हाथों का भी शिक्षण देने के पक्ष में थे|
- राष्ट्रीय भावना का समावेश और भारत के पुनर्निर्माण की तीव्र अभिलाषा शाहू जी के शैक्षिक विचारों की विशेषता थी उनका विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है शिक्षा के उद्देश्य को भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद से सम्बन्धित बताया है| इस महापुरुष के शैक्षिक उद्देश्य आधुनिक शिक्षा के लिए प्रासंगिक हैं|
- पुस्तकीय शिक्षा का समर्थन न करते हुए देश कि आधारभूत आवश्यकताओं से सम्बंधित पाठ्यक्रम का निर्माण किया| इस पाठ्यक्रम को आधुनिक शिक्षा में शामिल किया जाए तो शिक्षा अवश्य अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगी|
- शाहू जी के शैक्षिक दर्शन में अध्यापक की गरिमा को स्वीकार क्र इसे उचित स्थान प्रदान करने कि बात खी गयी है जो वर्तमान शैक्षिक जगत कि मांग है| अतएव अध्यापक को सम्मानीय स्थान प्रदान किया जाना आधुनिक शिक्षा कि समृद्धि का अधार है|
- हरिजन शिक्षा , स्त्री शिक्षा , जन साधारण की शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा पर शाहू जी ने अधिक जोर दिया है|
- आधुनिक शिक्षा जगत में ऐसी परीक्षा पद्धति की आवश्यकता है जिसमे परीक्षा मात्र बौधिक विकास का ही मापन न होकर ज्ञानार्जन का मापदंड हो एवं सर्वांगीण विकास का साधन हो|
- व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित विचार शाहू जी ने सबके समक्ष रखे, आज व्यक्ति को उसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उसे बेरोजगारी से मुक्ति दिला कर उसका जीविकोपार्जन कर सके|
- इस महान शिक्षा दार्शनिक द्वारा निश्चित शिक्षा के सिद्धांत हमारे देश और इस काल के लिए ही नहीं अपितु हर क्षेत्र के लिए और हर काल में सही उतरने वाले हैं उन्हें सार्वभौमिक और सार्वजनिक सिद्धांत कहा जा सकता है|

- इनके शैक्षिक विचारों को अपनाकर आधुनिक शिक्षा में भारत कि उद्देश्य विहीन शिक्षा पद्धति का मार्गदर्शन किया जा सकता है|

3. कल्पना पाण्डेय (२००५) ने अपने शोधग्रंथ " जिद्दू कृष्णमूर्ति के दार्शनिक चिंतन के शैक्षिक निहितार्थ का आलोचनात्मक अध्ययन " के विश्लेषणात्मक अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए-

- शिक्षा प्रणाली का आधार उससे अभिप्राय, उद्देश्य, शिक्षक, शिक्षण प्रणाली, छात्र/छात्रा आचरण, अनुशासन और शिक्षक अभिभावक सम्बन्ध आदि होते हैं|
- शिक्षा का मूल अर्थ शक्तियों को भीतर से बाहर लाना है|यानि बच्चे अपने वंशक्रम से जो लेकर आयें हैं और वह बीज रूप में उनके अंदर अविकसित अवस्था में है उसका विकास करना है|
- जे० कृष्णमूर्ति जी ने सम्पूर्ण मानवता के लिए, सांस्कृतिक एकरूपता के लिए तथा समान नागरिक संहिता एवं जीवन यापन विकास के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शास्वत जीवन को समझने के लिए शिक्षा का उदेश्य निश्चित किया गया है|
- प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को समझने के लिए प्रज्ञा तथा बोध को जागृत कर ले तो संसार की सभी समस्याओं का समाधान स्वतः हो जायेगा|
- जे० कृष्णमूर्ति ने शिक्षक की भूमिका को अप्रत्यक्ष में महत्वपूर्ण माना है| आज का शिक्षक ज्ञानवेत्ता कम राजनेता, व्यवसायी,धर्मपरायण अदि रूपों में अधिक दिखलाई देता है|
- जे० कृष्णमूर्ति जी शिक्षक के बाह्य तथा आंतरिक विकास कि भूमिका पर जोर देते हैं| शिक्षक में एक ऐसी दृष्टि होनी चाहिए कि जो बच्चों के अंदर और बाह्य की अपर्याप्तता को जानकर शिक्षा देने का कार्य करे|
- बच्चों को शिक्षा के द्वारा एक अभिनव मानव के रूप में पल्लवित करना है ताकि वह सम्पूर्ण संसार और प्रकति के प्रति संवेदनशील हो सके|
- बच्चों में वैज्ञानिक विकास करना चाहिए ताकि वह प्रत्येक वस्तु को वैसा ही देखे जैसे वह वास्तव में होती है| अतः प्रत्येकी बच्चे को सत्य का ज्ञान कराना ही ईश्वर का दर्शन कराना होता है|
- जे० कृष्णमूर्ति जी ने मौलिकता के विकास को अनोखा या व्यक्तिगत बताया है जिसमे हमें स्वयं चलना है किसी का सहारा लिए बगैर, क्योंकि मानव की समस्त प्राचीन

अवधरणाएं और संस्कार उसकी मौलिकता को निश्चित रूप प्रदान करती हैं जो उसका न होकर समाज का होता है|

- जे० कृष्णमूर्ति जी का मानना है कि हमें प्रत्येक समस्या,वस्तु या परिस्थिति का ज्ञान उसके यथार्थ स्वरूप में करना चाहिए|
- मानव ने समाज ने स्वयं को संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या, द्वेष-भाव और माया-मोह में फंसा लिया है इससे बचने के लिए समाज की बनावटी सोच में परिवर्तन लाना होगा ताकि प्रत्येक सदस्य में नवजीवन और नवशक्ति का संचार होकर "स्व" का प्रस्फुटन हो सके|
- शिक्षा के द्वारा छात्र का सर्वांगीण विकास किया जाना चाहिए, ताकि वह अच्छा मनुष्य बन सके| जे० कृष्णमूर्ति जी ने अपनी शिक्षा के द्वारा "अभिनव मानव" के विकास का सुझाव दिया है|
- मानव मात्र को भौतिक भाव से ऊपर उठकर सत्य कि अनुभूति के प्रति जागरूक होना चाहिए ताकि वह जन सके "सत्य ही भगवान" है|

4. अजय बलहारा (२००७) ने अपने शोधग्रंथ "गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता" के विश्लेष्णात्मक अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए –

- शिक्षा जीवन व्यापी प्रक्रिया है|विकास की आधारशिला है अनुभव, अनुभव स्वतंत्र क्रिया में निहित है| मार्ग के अवरोधकों को दूर करने तथा मानव के सम्मुख अपने जीवन के लक्ष्य को सिद्ध करने कि अनुकूलता जुटाना सच्ची शिक्षा है|
- शिक्षा की प्रक्रिया का केन्द्र बिंदु बालक है| शिक्षा के द्वारा उसके वांछित विकास के अनुकूल परिस्थिति या वातावरण उत्पन्न किया जाना चाहिए|
- लड़कियों व लड़कों के लिए समान पाठ्यक्रम का समर्थन करते हैं| उनके अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण में छात्रों की रूचि, रुझानों व जरूरतों को ध्यान में रखा जाय|
- छोटे बालकों के लिए मांटेसरी पद्धति का पुरजोर समर्थन करते हैं| सीखना बालक के लिए आनंददायक क्रिया होना चाहिए|
- गिजू भाई कहते हैं जैसा हमारा बालक होगा वैसा हमारा भाव नागरिक बनेगा| बालक को उसके शरीर से नहींउसकी आत्मा से पहचाने, उसके विकास में मदद करें तथा उसकी आत्मा जिस लक्ष्य की ओर अग्रसर है उसकी प्राप्ति में उसकी हर संभव मदद करें|

- शिक्षक में संकल्पशीलता, निराभिमानिता,गौरवानुभूति, आत्मिक बल, कर्तब्यनिष्ठातथा निरंतर विकासोन्मुकता के गुण होने चाहिए|
- गिजू भाई शिक्षण की जनतांत्रिक पद्धति को सर्वोत्तम मानते है| वे कहते कि एक्तान्त्रिक शिक्षण पद्धति में शिक्षक कि भूमिका नौकर की तथा छात्र कि भूमिका सेठ की बन जाती है| शिक्षक ही शिष्य के लिए सब कुछ करता है|
- गिजू भाई विद्यालय में गृहकार्य कि परम्परा को उचित नहीं मानते है| उनका मानना है इससे बालकों पर अनावश्यक बोझ बढ़ जाता है|
- बालक का स्वस्थ्य व संतुलित विकास विद्यालयों पर निर्भर है| यदि समाज रुग्ण है तो विद्यालय रुग्ण है| उनका मानना था कि हमारे विद्यालय बाल सृजन शक्ति के पोषक नहीं वरन हत्यारे बन गए हैं|
- बालक के विकास में परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है| गिजू भाई का मत है परिवार में एक सुनिश्चित व्यवस्था हो या तंत्र हो, निर्णय लेने का निश्चित केन्द्र हो, सत्ता का स्वरूप स्पष्ट हो| यह तंत्र भय पर आधारित न हो|

5. आशुतोष त्रिपाठी (२०१४) ने अपने शोध ग्रन्थ "प० श्री राम शर्मा आचार्य के अध्यात्मवाद का व्यावहारिक दृष्टिकोण से शिक्षा और समाज में योगदान:एक समीक्षात्मक अध्ययन" के विश्लेष्णात्मक अध्ययन के अंतर्गत निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- आचार्य श्री ने जहाँ एक ओर प्रचलित आडम्बरों से आध्यात्म को मुक्त कराया वहीं दूसरी ओर वह ऐसे अध्यात्म को आत्मसात करने की बात करते हैं जो कोरे कर्मकांडों से दूर विशुद्ध वैज्ञानिकता पर आधारित है|
- आचार्य श्री का मानना है कि चरित्र निर्माण के संस्कार बालक को छात्र जीवन से ही देने होंगे तभी वह एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में विकसित होगा|
- वैश्विक मूल्य ह्रास के इस दौर में अध्यात्मिक चिंतन की धारा को वैज्ञानिक प्रगति के साथ समाविष्ट कर छात्रों को संस्कार रूप में मूल्य शिक्षा देने में आचार्य जी के अध्यात्मवाद कि महती उपयोगिता है|
- शिक्षा समाज निर्माण का साधन बनती है| स्वस्थ शैक्षिक समाज के निर्माण हेतु हमे अपनी शिक्षा व्यवस्था में उन गतिविधियों और शैक्षिक क्रियाकलापों को समाहित करना होगा जो अध्यात्मिक आधारभूत मूल्यों पर आधारित है|

- आचार्य श्री राम शर्मा २१वीं सदी को नारी सदी के रूप में उद्धाषित करते हैं , सुशिक्षित नारियां राष्ट्र के विकास की धुरी होती हैं| आचार्य जी ने अपने अध्यात्मवाद में नारी को पुरुषों के साथ बराबर का दर्जा दिया है|
- प० श्री राम शर्मा आचार्य का अध्यात्मवाद छात्रों को आदर्श नागरिक के रूप में विनिर्मित कर उन्हें शांति का संवाहक और विश्व बंधुत्व का सृजक बनाने में पूर्णतः समर्थ है|

2.3 निष्कर्ष

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट है कि विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा शैक्षिक योगदान पर सतत रूप से शोध किया गया है, तथा उनकी विषय सजगता के साथ परस्पर संबंधों पर भी गहन अध्ययन हुआ है| पूर्ववर्ती अध्ययनों के अध्ययन से शोधकर्ता को अत्यधिक लाभ हुआ है| वह प्रारंभ से न केवल अपना मार्ग प्रशस्त कर सका अपितु शोधकर्ता की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया में संशोधन और परिवर्तन भी किए और अपने निष्कर्ष की पुष्टि के लिए विषय से सम्बंधित अनेक मूल स्रोतों का अवगाहन भी किया| इसके अतिरिक्त भावी संभावनाओं के सम्बन्ध में भी प्रकाश मिला|

शोधकर्ता को सम्बंधित साहित्य के अध्ययनों के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट ज्ञात हुआ कि शैक्षिक योगदान से सम्बंधित जो भी शोधकार्य समय-समय पर होते रहे हैं उनमे सुधांशु जी महाराज द्वारा स्थापित संस्था विश्व जागृति मिशन के शैक्षिक योगदान को कहीं भी सम्मिलित नहीं किया गया है|

अतः निश्चित रूप से इस शीर्षक "**वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान**" का अध्ययन जन मानस के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा|

तृतीय अध्याय

संस्थापक परिचय एवं दर्शन

3.1 श्री बाला साहब जी का परिचय

इक्कीसवींसदी का भारत, यह प्यारा विश्व भी नयी करवट ले रहा है| इस सृष्टि के प्रथम निर्माण के समय परमात्मा के "एकोअह्म बहुस्यामि" के प्रथम संकल्प की भांति प्रभु मानो इन दिनों नवनिर्माण का अंतर्संकल्प जागृत चुके हैं| तब वह अदृश्य जगत में तदनुरूप विलक्षण सकारात्मक वातावरण का निर्माण कर देतें है, संकल्प पूर्ति में प्रत्यक्ष सहायक निज-शक्तियों का आविर्भाव कर देते हैं |

सम्प्रति, इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में ऐसा ही हो रहा है| परमपिता परमेश्वर दृश्य और अदृश्य जगत में वह प्रकाश रश्मियाँ भरपूर मात्रा विकीर्ण कर रहे हैं, जो विशिष्ट ईश्वरीय संकल्प से उपजे प्रभु के इस प्रिय विश्व उद्यान को सुन्दरतम एवं सुसंस्कृत बनाने में, इसके अभिनव निर्माण में, उसके लिए अपरिहार्य क्रांतिकारी जागरण में सहायक हो सकती है| इस ईश्वरीय विधान को पूरा करने के लिए समय-समय पर विशिष्ट महापुरुषों का आगमन ईश्वर की इच्छा से ही धरती पर होता आया है|

महापुरुषों काजीवनव उनका व्यक्तित्व तथा उनके सभी कृत्य असामान्य ही होते हैं| उनका जीवन-प्रसंग जनसामान्य के लिए अनुकरणीय बन जाता है| उनमें भी जो जन्मजात कठिनाइयों एवं विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करके ऊँचे उठते हैं, वे और भी श्रद्धास्पद बन जाते हैं| ऐसे महापुरुष जनमानस का समुचित मार्गदर्शन करने में सक्षम होते हैं और उन्हें ही किसी के जीवन का मार्गदर्शक चुना जा सकता है| देवात्मा हिमालय के महान तपस्वी संतों के पवन सानिध्य में विकसित हुए परमपूज्य श्री **बाला साहब** जी भी इसी कोटि के प्रखर राजनैतिक व आध्यात्मिक महापुरुष थे|

रामचंद्र काशीनाथ म्हालगी (1921-1982) जिन्हें आमतौर पर रामभाऊ म्हालगी के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय राजनीतिज्ञ और लोकसभा के सदस्य थे। उनका जन्म 9 जुलाई 1921 को पुणे जिले के कडुस में काशीनाथपंत और सरस्वतीबाई के यहाँ हुआ था। उन्होंने पुणे में सरस्वती मंदिर स्कूल में दाखिला लिया और 1939 में मैट्रिक किया। उन्होंने एलएलबी और एमए अर्जित किया, साथ ही बार काउंसिल की परीक्षा भी पास की। वह 1950-54 में आरएसएस के क्षेत्रीय सचिव थे। वह आरएसएस की छात्र शाखा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) को चलाने में भी शामिल थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के आग्रह पर वे आरएसएस प्रचारक के रूप में केरल गए।

3.2 व्यक्तित्व

हर युग में जीवन के विशाल महासागर में बहुपक्षीय विचारों के संकट और गर्त हैं| स्वर्गीय और धन्य आत्माओं का समय-समय पर फिर से परास्नातक के रूप अवतरण हुआ है और इस गहरे समुद्र पर मानव जाति को पालने में मदद की है, अनंत ज्ञान की नाव की नाव में शंकाओं और अज्ञान की उथल-पुथल भरी लहरों को समेटे हुए है|

श्री **बाला साहब** जी महाराज इस युग की दिव्य मूर्ति हैं, जिन्होंने अपने अनुयाइयों को अपने शब्दों के माध्यम से मंत्रमुग्ध कर दिया था और अपनी सुरीली आवाज के माध्यम से उनके मन को मोह लिया है|

3.3 बचपन

बाला साहब का जन्म 26 दिसम्बर 1913 को महाराष्ट्र के अमरावती मे एक माध्यम परिवार मे हुआ था पुणे जिले के एक सुस्थापित कृषि परिवार में हुआ था।केशव राज देश पांडे एवं माता श्री मती लक्ष्मी बाई थी स्कूल में स्थानीय भाषा की अंतिम परीक्षा पास करने के बाद, उन्होंने पुणे में सरस्वती मंदिर स्कूल में प्रवेश लिया और एक शैक्षणिक वर्ष में 3 ग्रेड पास किए, 1939 में प्रथम

श्रेणी के साथ मैट्रिक की परीक्षा पास की। देशपाण्डे घराना मूलतः वर्धा जिले के आर्वी तहसील का है। श्री बालासहब की प्राथमिक शिक्षा मध्यप्रदेश के सागर तथा महाराष्ट्र के अकोला तथा नरसिंहपुर में हुई। मैट्रिक की परीक्षा काशी हिन्दू विद्यापीठ से उत्तीर्ण की। विद्यार्थी अवस्था में ही श्री कृष्णराव जोशी ने बाला साहब को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक पं0 पू0 हेडगवार के साथ परिचय कराया फिर वे संघ के स्वयं सेवक बने। 1930 में उन्होने नागपुर के हिस्लॉप कॉलेज में प्रवेश किया। 1935 में बीए की उपाधि प्राप्त की और विधि की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद 1937 में पहले नागपुर मे ही वकालत प्रारम्भ की। 1938 में एमए हुए और व्याख्याता की नौकरी हेतू प्रयास भी किये।

प्रकृति की पवित्रता और सुंदरता ने उन्हें इतनी गहराई से आकर्षित किया कि वे स्वयं भी प्रकृति की तरह शुद्ध और आकर्षित हो गए| महाकाव्यों से प्राप्त विचारों, अनुभव और ज्ञान को वितरित करने के लिए उन्होंने अपने बचपन के दिनों में भी एक विशिष्ट तरीका और शैली विकसित की|

म्हालगी का 06 मार्च 1982 को निधन हो गया। उनका विवाह विजया से हुआ था, जिनकी 2011 में पुणे में वृद्धावस्था में मृत्यु हो गई थी। उनका एक बेटा है जिसका नाम जयंती है|

3.4 राजनैतिक यात्रा

1948 में जब आरएसएस पर प्रतिबंध लगा तो रामभाऊ भूमिगत हो गए और अन्याय के खिलाफ आंदोलन जारी रखा। प्रतिबंध हटने के बाद, वह वापस पुणे चला गया, जहाँ उसने एलएलबी और एमए दोनों की डिग्री हासिल की और बार काउंसिल की परीक्षा पास की। उन्हें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी), आरएसएस की छात्र शाखा और बाद में जनसंघ (आरएसएस की तत्कालीन राजनीतिक शाखा) की जिम्मेदारी सौंपी गई और उन्होंने महाराष्ट्र में पार्टी के कार्यकारी अधिकारी के रूप में जिम्मेदारी संभाली। अपने नेतृत्व, रचनात्मकता और व्यावहारिकता के साथ, उन्होंने विभिन्न मोर्चों की स्थापना की, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों तक पहुंचने की कोशिश की। उन्होंने जम्मू और कश्मीर के भारत में विलय के बारे में जागरूकता पैदा करने में मदद की। जैसे-जैसे पार्टी बढ़ती रही, उन्होंने एक शिक्षक - मनु घनेकर से शादी कर ली। उन्होंने अपने व्यक्तिगत, पेशेवर और राजनीतिक जीवन को खूबसूरती से संतुलित किया।

म्हालगी भारतीय जनता पार्टी और इसके पहले के संस्करण जैसे 1977 तक जनसंघ और 1977 से 1980 तक जनता पार्टी से संबंधित थे। उन्होंने 1957 के बॉम्बे विधान सभा चुनाव में संयुक्त महाराष्ट्र समिति के सदस्य के रूप में मावल निर्वाचन क्षेत्र से जीत हासिल की, और बॉम्बे विधानमंडल में विपक्षी नेता के रूप में कार्य किया। उन्होंने शिवाजीनगर (विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र) से 1962 का महाराष्ट्र विधान सभा चुनाव लड़ा, लेकिन सदाशिव गोविंद बर्वे से हार गए।

वह 1967 और 1972 में शुक्रावर पेठ विधानसभा सीट (अब बंद हो चुकी) से भारतीय जनसंघ के सदस्य के रूप में महाराष्ट्र विधानसभा के लिए चुने गए थे। उन्हें 1976 में आपातकाल के दौरान आंतरिक सुरक्षा अधिनियम (मीसा) के रखरखाव के तहत गिरफ्तार किया गया था।

बाद में, वह 1977 में भारतीय लोक दल के उम्मीदवार और 1980 में जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में महाराष्ट्र राज्य के ठाणे से लोकसभा के लिए चुने गए। जब तत्कालीन जनसंघ गुट जनता पार्टी से अलग हो गया, और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का गठन किया, तो म्हालगी को भाजपा की महाराष्ट्र राज्य इकाई का पहला अध्यक्ष नामित किया गया।

3.5 महान पुरुष की महान परिकल्पना

भारत के प्रखर चिन्तक, विचारक एवं राजनीतिज्ञ श्री बाला साहब ने राष्ट्र की वर्तमान अवस्था पर गंभीर चिंतन किया है| देश की आजादी के तीन-चार दशक बाद भी उन्होंने राष्ट्र को पुनः आर्थिक दासता की, परावलंबन की, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों में गिरावट की एवं उसे प्रतिगामी बनाने वाली अनेक बेड़ियों से जकड़ा हुआ पाया| जिस राष्ट्र के लिए लाखों व्यक्तियों ने अपना व्यापार छोड़ा, नौकरियां छोड़ी, परिवार छोड़ा, अपना सुख-चैन छोड़ा और स्वदेश के लिए स्वयं को न्यौछावर कर दिया, उसकी उन्नति की बजाय अवनति की स्थिति देखकर उन्हें बड़ी पीड़ा हुई| उनकी धारणा बनी कि राष्ट्र हो अथवा विश्व, सबके मूल में 'व्यक्ति' सबसे महत्वपूर्ण इकाई है| समाज, राष्ट्र एवं विश्व में जागृति का कोई भी प्रयत्न हो, व्यक्ति के निजी चिंतन, चरित्र, आचरण एवं व्यवहार में उत्कृष्टता लाए बिना वह पूरा नहीं होगा| इसके लिए निरंतर गंभीर राजनैतिक व आध्यात्मिक पुरुषार्थ करने होंगे, साथ ही उपेक्षितों, वंचितों तथा पीड़ितजनों की सेवा के लिए बहुविधि प्रयत्न करने पड़ेंगे |

3.6 उनकी धारणा

ब्रह्मांड की मुख्यधारा में खुशी और शांति का प्रवाह हो सकता है| समाज नफरत, दुश्मनी, हिंसा और बदले से मुक्त हो सकता है| संतों और ऋषियों के ज्ञान का अमृत मानवता के हर वर्ग तक पहुंच सकता है| धार्मिक मन के लोग आगे आ सकते हैं और दूसरों की सेवा और मदद कर सकते हैं| हम चाहते हैं कि राम और उनके माता-पिता के प्रति समर्पण के आदर्श, नैतिकता और आदर्श हमारे जीवन के मार्गदर्शक बन जाए और उन्हें हम गले लगाना चाहिए| हम दुष्ट लोगों के विनाश, सदाचारी व्यक्तियों की सुरक्षा, गायों के संरक्षण और पालन-पोषण की कामना करते हैं,जिससे गीता के अमृत-तुल्य संदेश हमारे दैनिक जीवन में उतरते हैं| गौतम, कपिल, पतंजलि और वेद व्यास की परंपराएं एक बार फिर से इस धरती पर प्रबल हो सकती हैं|

यह परम सत्य है| प्रत्येक प्राणी उस परम सत्य का एक सूक्ष्म जगत है| वह अनंत और दिव्य सार सभी प्राणियों में शांति, आनंद, पूर्णता और मौन के रूप में मौजूद है| उसकी शक्ति सर्वोच्च है| मानव जीवन का अंतिम उद्देश्य जन्म के समय और सांसारिक मामलों से मुक्ति और जन्म के बाद आकर्षण और भ्रम से मुक्ति पाना है| मनुष्य मायावी दुनिया को वास्तविकता के रूप में स्वीकार करता है और इस प्रक्रिया में सर्वोच्च में अपने मूल को भूल जाता है, और मनुष्य काम, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या और हिंसा की भावनाओं के निचले हिस्से में शामिल हो जाता है| वह भ्रम की दुनिया में रहना शुरू कर देता है|वह अपना पूरा जीवन मन की मायावी शांति की तलाश में रहता है| उसका सफर कभी खत्म नहीं होता| जन्म के बाद जन्म वह खेल है जिसमें वह फंसा हुआ है|

3.7 संस्थापक का जीवन दर्शन

एक असाधारण दूरदर्शी और राष्ट्रवादी विचारधारा के अग्रदूतों में से एक पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए एक अकादमी के विचार की कल्पना की थी। हालाँकि, पंडित दीनदयाल उपाध्याय का निधन हो गया, इससे पहले कि वे अपनी दृष्टि को वास्तविकता में बदल पाते। पंडितजी के अचानक और दुर्भाग्यपूर्ण प्रस्थान के बाद, महाराष्ट्र के एक प्रमुख राजनीतिक व्यक्ति रामभाऊ म्हालगी ने अपने विचार को साकार करने की जिम्मेदारी ली।

3.7.1 लोगों के दुःख-दर्द साझा करना

रामभाऊ म्हालगी जी ने भारत में व्यापक रूप से यात्रा की और आम आदमी के जीवन और जीवन का अध्ययन किया| सुखी जीवन व्यतीत कर रहे लोगों की दुर्दशा देखकर उन्हें दुख हुआ| वह उन निर्दोष बच्चों की स्थिति की कल्पना करने के लिए ले जाया गया, जिन्हें दयनीय जीवन जीने के लिए मजबूर किया गया था| उनमें से कुछ अनाथ थे और अमानवीय जीवन जी रहे थे| इसी तरह की तर्ज पर श्री रामभाऊ म्हालगी के कोमल हृदय ने लोगों के अन्य दलगत वर्ग की स्थिति देखी इसलिए उन्होंने अपने जीवन को मानवीय आधार पर आगे बढ़ाने की दिशा में काम करना शुरू कर दिया|

रामभाऊ म्हालगी जी ने विवेकशीलता, शत्रुता, ईर्ष्या, बदले की भावना और कई अन्य बीमारियों और मानव के अहंकार को परिवारों में और समाज में कहर ढाते हुए पाया उनका मानना है कि इस तरह की पुरुषवादी विचार मन की जड़ता के कारण होते हैं जिन्हें ऊर्जावान बनाने की जरूरत है| उन्होंने बचपन में अपनी कुण्डलिनी शक्ति को जागृत किया था|

जैसा कि पहले बताया गया था कि बाला साहब भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को पुनर्जीवित करने में लगा हुआ है| यह जनता के बीचधार्मिक जागृति, सामाजिक जागरूकता, और मानव भाई चारे के लिए समर्पित है, लेकिन विशेष रूप से भारत के गरीब और युवाओं के बीच| इस के बैनर तले उन्होंने अर्जित ज्ञान को दुनिया के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले लाखों लोगों के लिए सुलभ बनाने का महान मिशन शुरू किया| उनके द्वारा दिए गए राजनैतिक भाषणों और दिव्य संदेशों से आकर्षित होकर असंख्य लोग प्रबोधिनी की सच्ची आध्यात्मिकता, सद्भाव, भाईचारे निस्वार्थ सेवा और दलितों के उत्थान के सिद्धांतों पर आधारित मिशन में शामिल हुए|

3.7.2 मानव विकास के लिए समर्पित जीवन

बाला साहब की मान्यताएं मानव जीवन के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को छूतीं हैं| शांत विचार मस्तिष्क को विश्राम और शांति प्रदान करतें हैं, और मन शक्ति उत्पन्न करता है| यह एकाग्रता,अवधारणा शक्ति, आत्मविश्वास ,इच्छाशक्ति और कई और लक्षणों को बढ़ाने में मदद करता है, जो जीवन में आगे बढ़ने में मदद करतें हैं| उनका मानना है कि विचार व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को आकार देते हैं| वे हमें सही रास्ते पर हमारे प्रयासों को बढ़ाने में सक्षम बनाते हैं| वह पाप होने के कारण कायरता और कमजोरी दोनों से दूर रहने पर जोर देता है| बहादुर लोग नैतिक मूल्यों को निभाते हैं और इसलिए निडर होते हैं|

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि उन्होंने अपने सपने को सार्थक रूप देने के लिए वनवासी आश्रम की स्थापना की थी| वह अपने सपने को एक वास्तविकता बनने के लिए मना करता है, उसका सपना है; विश्व भर में ज्ञान| यह जागरूकता आंतरिक आत्म को देखने और ज्ञान के खजाने में डूब जाने के रूप में है|बाला साहब जी के दर्शन मानव जीवन के हर मिनट के पहलू को दरकिनार करते हैं| उनके उपदेश प्रेम, सहानुभूति, करुणा, सहयोग, समन्वय, शांति, और दिव्यता के सर्वोच्च गुणों के साथ जन को एकीकृत करने कि दिशा में आगे बढ़ते हैं| वह प्यार कि भावना को सबसे अधिक महत्व देता है और गरीबों के लिए मदद करता है, जो उसके दिल की सीट से एक फव्वारे के रूप में उत्पन्न होता है|

महापुरुषों का जीवन उनका व्यक्तित्व तथा उनके सभी कृत्य असमान्य होते हैं।ऐसे ही महापुरुष जनमानस का समुचित मार्गदर्शन करने में सक्षम होते हैं।

3.8 संस्थापक का शैक्षिक दर्शन

सांसद बाला साहब के कहने पर सबसे पहले आरएमपी राजनीतिक नेतृत्व प्रशिक्षण मिशन लागू किया गया। बाला साहब के विचारक और भाजपा नेता दीनदयाल उपाध्याय से प्रभावित थे, जिन्होंने महत्वाकांक्षी राजनीतिक नेताओं और भारत के वर्तमान निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए एक शिक्षण प्रतिष्ठान के विचार की कल्पना की थी। दुनिया भर में युवाओं में राजनीति की भूमिका के प्रति दिलचस्पी बढ़ रही है, खासकर लोकतांत्रिक व्यवस्था में। ठीक है, क्योंकि युवा राजनीति, मीडिया, समाज या विज्ञान और प्रौद्योगिकी के हर क्षेत्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राजनीतिक पारिस्थितिकी तंत्र के लिए विशेष रूप से, युवा लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उनके महत्व के बावजूद, औपचारिक, संस्थागत राजनीतिक प्रक्रियाओं में युवाओं की अपेक्षाकृत कम भागीदारी का एहसास करना विडंबना है, खासकर जब उनके पुराने समकक्षों की तुलना में। यह राजनीतिक व्यवस्था के प्रतिनिधित्व को चुनौती देता है और युवा लोगों के मताधिकार से वंचित करता है। सही अवसरों और कौशल प्रबंधन का अभाव भी संभावित भविष्य के नेता बनने और देश को आगे से नेतृत्व करने में एक बाधा है।

3.8.1 शिक्षा में व्यक्ति महत्वपूर्ण

भारतवर्ष के प्रखर, चिंतक, विचारक एवं राजनीतिज्ञ रामभाऊ म्हालगी जी महाराज ने राष्ट्र की वर्तमान अवस्था पर गंभीर चिंतन किया| देश की आजादी के दो-तीन दशक बाद भी उन्होंने राष्ट्र को पुनःआर्थिक दासताकी, परावलंबन की, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों में गिरावट की और उसे प्रतिगामी बनाने वाली अनेक बेड़ियों से जकड़ा हुआ पाया| जिस राष्ट्र के लिए लाखों व्यक्तियों ने अपना व्यापार छोड़ा, नौकरियां छोड़ी, परिवार छोड़ा, अपना सुख-चैनछोड़ा और स्वदेश के लिए स्वयं को न्यौछावर कर दिया, उनकी उन्नति की बजाय अवनति की स्थिति देखकर बड़ी पीड़ा हुई| उनकी धारणा बनी कि राष्ट्र हो अथवा विश्व सबके मूल में व्यक्ति सबसे महत्वपूर्ण इकाई है| समाज, राष्ट्र एवं विश्व में जागृति का कोई भी प्रयत्न हो व्यक्ति के निजी चिंतन, चरित्र, आचरण एवं व्यवहार में उत्कृष्टता लाए बिना पूरा नहीं होगा| इसके लिए गंभीर राजनैतिक, अध्यात्मिक प्रयास एवं पुरुषार्थ करने होंगे, साथ ही उपेक्षित वंचितों तथा पीड़ित जनों की सेवा के लिए प्रयत्न करने पड़ेंगे।

कोई भी राष्ट्र अथवा समाज तभी उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है, जब समाज का हर व्यक्ति उन्नत हो और वह आचरण व्यवहार, चरित्र, चिंतन आदि में उन्नति के पथ पर हो या उच्च विचारों वाला हो तथा सांस्कृतिक रूप से संपन्न हो और जब समाज उन्नत होगा तो राष्ट्र उन्नति

करेगा या उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा| विश्व में शांति की स्थापना हेतु मानव कल्याण की भावना से, **वसुधैव कुटुंबकम** की भावना से व्यक्ति सहयोग और सौहार्द के साथ विश्व में शक्ति की स्थापना हेतु एक प्रयत्न होगा, इस सब के लिए व्यक्तित्व का विकास,आर्थिक रूप से शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है।

3.8.2 शिक्षा को प्राचीनता से जोड़ना

वर्तमान समाज में पश्चिमी अंधानुकरण के कारण मैकाले की शिक्षा पद्धति को अपनाते हुए अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा है| अतः नयी पीढ़ी को अपनी प्राचीनतम सांस्क्रतिक विरासत से जोड़ने का विचार रामभाऊ म्हालगी जी के मन में आया| इसी क्रम में प्राचीन विद्याओं से नयी पीढ़ी को जोड़ने के लिए रामभाऊ म्हालगी जी के परिवार द्वारा प्रेरणा से रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी की स्थापना की गयी| बीते 39 वर्षों से कार्यशील रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी से निकले विद्यार्थी देश-विदेश में संस्कृत व संस्कृति की भारी सेवा कर रहे हैं एवं कुशल राजनैतिक नेतृत्त्व कर रहे हैं|

भविष्य के राजनीतिक नेताओं को तैयार करने वाली एकमात्र संस्था रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी (आरएमपी) है। इस कारण की ईमानदारी को स्थापित करने के लिए, आरएमपी ने भारतीय लोकतंत्र और नेतृत्व संस्थान (IIDL) को भी संस्थागत रूप दिया था, जिसके तत्वावधान में यह स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम चला रहा है। यह एक औपचारिक अंतःविषय पाठ्यक्रम का गठन करता है, जिसमें नवोदित युवा प्रतिभाओं के माध्यम से भारत की लोकतांत्रिक राजनीतिक इकाई और शासन में अंतर को भरने पर ध्यान दिया जाता है।

वर्तमान में जो शिक्षा प्रणाली चल रही है वह पाश्चात्य से अधिक प्रभावित है| अतः रामभाऊ म्हालगी ने अपनी राजनैतिक सांस्कृतिक पद्धति को पुनः विश्व पटल पर लेन के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली को प्राचीन वैदिक संस्कृति के अनुसार गुरुकुल से जोड़ने का प्रयास किया है| जिससे युवा पीढ़ी वर्तमान शिक्षा पद्धति के साथ साथ अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को लेकर आगे बढ़े और सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार हो|

3.8.3 सद्संस्कार, सद्शिक्षण से जगायें, अपने बच्चों का सुकोमल मन

किसी मनुष्य द्वारा संपन्न सत्कार्य उसे बचपन में विरासत के रूप में मिले हुए संस्कारों का परिणाम होते हैं। क्योंकि उन संस्कारों ने ही उसे सुगढ़ता प्रदान की है जो अब अभिव्यक्ति पा रहा है| सद्संस्कार व सद्प्रशिक्षण के बिना मनुष्य भी पदार्थ ही तो है। जैसे कोई धातु या वस्तु अपने मूल रूप में इतना आकर्षण नहीं पैदा करती जितना कि उसे कुछ सजा संवार कर एक सुंदर आकृति में परिणत करने पर उसमें आकर्षण बढ़ जाता है। यह सजना संवारना ही अंदर से जुगाड़

बनाना है। विशेष धातु अपने मूल की अपेक्षा उस से निर्मित संस्कारित आभूषण लोगों को ज्यादा आकर्षित करते हैं। इसी को भारतीय सनातन साधकों, गुरु, संतों ने संस्कार परंपरा से संबोधित किया है। जैसे धातु को आभूषण रूप में संस्कारित करते हैं, तो उसका मूल्य बढ़ जाता है, उसमें चमक पैदा हो जाती है, वह अधिक उपयोगी दिखने लगता है, ठीक वैसे ही मनुष्य को संस्कार प्रक्रिया से गुजर कर उसका गौरव व मूल्य बढ़ाने की विज्ञान सम्मत प्रणाली हमारे महापुरूषों-ऋषियों ने हम सब को दी है। हमारे ऋषि प्रणीत गुरुकुल इन्हीं संस्कारों की खान है।

यह सच है कि हर बालक जन्म के साथ ही माता-पिता, स्वजनों के बीच उनके चिंतन, चरित्र, व्यवहार से एक अवधि तक संस्कार सीखता है। इसके बाद वह IIDL में प्रवेश लेकर अपने आचार्यों के सानिध्य में उनके द्वारा दिए गए शिक्षण व संस्कारों से अपना निर्माण पूरा करता है| इसी निर्माण की प्रक्रिया से मनुष्य में पड़े संस्कार बड़े होकर समाज के बीच अभिव्यक्त होते हैं। यद्यपि गर्भ काल से ही माता-पिता द्वारा किए हुए आचरणों का शिशु पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः सावधानी वहीं जरूरी है, पर बालक के जन्म के बाद तो ऐसे परिवेश का निर्माण हर माता-पिता को करना ही चाहिए, जिसमें सुसंस्कार, सद्विचार एवं सदाचार की मनमोहक सुगंध समाहित हो, जो कि बालक के कोमल मन को सुवासित कर सके। जब वह छोटी उम्र का बालक होता है तब वह अपने घर परिवार के बीच अनुकरण के द्वारा ही सीखताव गढ़ जाता है, फिर गुरुकुल में प्रशिक्षण के द्वारा जगत के सारे उपक्रम सीखता है। पर खास बात यह है कि यदि उसे अपने परिवेश में रहकर सद्चरित्रता एवं सदाचरण के व्यवहार एवं बर्ताव का अवलोकन करने का अवसर मिलता है, तो वह सुसंस्कारित होगा अन्यथा बालक में संस्कारों की मैल ही चढ़ेगी।

इसलिए माता-पिता एवं पारिवारिक जनों तथा गुरुकुलों में आचार्यों का कर्तव्य है कि बच्चे को ऐसी प्रेरणा, सद्संस्कार,सद्प्रशिक्षण एवं सीख दें ताकि वह अपने जीवन पथ में स्वयं के लिए, समाज के लिए, राष्ट्र एवं विश्व के लिए सुखद एवं सुवासित फूलों से भरे गुलशन का निर्माण कर सकें। उसमें बड़े होकर ऐसी सदवृत्तियां आ जाएं कि उसके द्वारा बताया मार्ग युगों-युगों तक सद्प्रेरणा बनकर लोगों को प्रेरित करता रहे। जिससे उसका स्वयं का जीवन भी सफल हुआ सार्थक साबित हो सके। आइए हम सब अपने परिवार को भी गुरुकुलीय वातावरण देखकर बच्चों को ऋषिप्रणीत संस्कारों एवं दैवीय गुणों से भरे, जिससे देवत्व से युक्त समाज का निर्माण हो सके।

3.8.4 शिक्षा में चरित्र की स्थापना एवम जीवन को वेद और वैदिक संस्कारों से जोड़ना

शिक्षा मनुष्य के विकास की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है| इसका उद्देश्य मनुष्य का सर्वोन्मुखी विकास करना है जिससे उसका संपूर्ण व्यक्तित्व विकसित हो| ऐसी शिक्षा की देश को आवश्यकता है जिससे चरित्र निर्माण हो, व्यक्ति की मानसिक शक्ति बड़े और वह स्वाभिमान के साथ स्वावलंबी बने|

स्वामी विवेकानंद उपनिषदों पर आधारित इस व्यावहारिक शिक्षा दर्शन के पक्षधर होने के कारण आधुनिक शिक्षा प्रणाली के आलोचक कहे जाते थे। उन्होंने इस बात पर बल दिया था कि पुस्तकीय शिक्षा उपयोगी है, लेकिन शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें चरित्र का निर्माण हो, मानसिक शक्ति में वृद्धि हो, बुद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में आत्मा विद्यमान है| सभी ज्ञान और शक्तियां मनुष्य के भीतर हैं। मनुष्य की आत्मा से ही संपूर्ण ज्ञान आता है। यह वही प्रकट कर पाता है जो अपने अंदर देखता है। बाला साहब सदियों पुराने भारतीय मूल्यों की पृष्ठभूमि के साथ मानव पूंजी और प्रबंधन क्षमताओं को विकसित करने पर केंद्रित है, इसकी प्रेरणा भारतीय संसद के पूर्व सदस्य और लोगों के उत्कृष्ट प्रतिनिधि स्वर्गीय रामभाऊ म्हालगी से मिलती है। जैसा कि हम जानते हैं, लोकतंत्र की सफलता निर्वाचित प्रतिनिधियों के समर्पण और दक्षता पर निर्भर करती है।

इसमें गुरुकुल पद्धति और आधुनिक शिक्षा पद्धति दोनों प्रकार से विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है। राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि**,"भवनों के निर्माण से बढ़कर व्यक्ति के निर्माण का कार्य प्रमुख है।"**

शास्त्रों में कहा गया है कि-'विद्या दान महादान' और 'सा विद्या या विमुक्तए'।

3.8.5 पीड़ा से उपजा अभियान

कालांतर में हमारे देश में विदेशियों ने आक्रमण किये और हजारों वर्ष तक हमारा देश दूसरों के अधीन रहा। विदेशियों ने तरह-तरह के अत्याचार करते हुए हमारी शिक्षा पद्धति को भी बदल दिया। शिक्षा पद्धति के बदलने से हमारे संस्कार प्रभावित हुए। संस्कारों के प्रभावित होने से लोग रूढ़िवादी हो गये और अंधविश्वास ज्यादा बढ़ गया। पवित्र भारत भूमि पर विभिन्न संप्रदायों मत-मतान्तरों तथाकथित महिमामंडित गुरुओं ने विभिन्न जाति एवं धर्म को मानने वाले भोले-भाले मानव को भटका दिया उन्हें दिग्भ्रमित कर दिया। सामान्यजन रूढिवादिता, अंधविश्वास, जादू टोना, यंत्र-मंत्र के ऐसे दलदल में फंस गए कि जहां से उबर पाना असंभव तो नहीं कठिन अवश्य हो गया।

परिणामतः भारतीय समाज भिन्न-भिन्न मत-मतान्तरों में बँट गया और सब लोग अपने-अपने पंथ धर्म की प्रशंसा करने लगे। अपने धर्म, संप्रदाय की प्रशंसा करनी भी चाहिए लेकिन दूसरे का धर्म निकृष्ट है, निम्न है ऐसा कहना अप्रासंगिक है, अनुचित है और राष्ट्र उत्थान में बाधक है।

देश में इन विसंगतियों को देखते हुए पूज्य श्री बाला साहब जी के मन में पीड़ा हुई और उनके मन में यह शुभ संकल्प जागृत हुआ कि संपूर्ण भारतवर्ष में सभी षोडश संस्कारों, कर्मकांडों, सभी यज्ञों एवं पूजा पद्धतियों की एक प्रमाणिक विधि हो जिससे लोग भ्रमित न हों|

चतुर्थ अध्ययाय

संस्था का परिचय एवं योगदान

4.1 बनवासी कल्याण आश्रम का परिचय :

700 से अधिक जनजातियोंउपजातियों में बिखरे/, शेष समजा से उपेक्षित, शोषित, अशिक्षित बन्धुओं को उनके गौरवशाली अतीत को स्मरण कराने, 'तू मै एक रक्त' की अनुभूति कराने, उनके चैतन्य को जगाने, स्वावलम्बी बनाने, नेतृत्व क्षमता निर्माण करने के लिए स्व0 रमाकान्त केशव देशपाण्डे, उपाख्य 'बाला साहब देशपाण्डे' ने सन् 1952 में पं0 पू0 श्रीगुरू जी की सद्प्रेरणा और महाराजा विजय भूषण सिंह देव के सक्रिय सहयोग से, तत्कालीन मध्य प्रदेश, वर्तमान छत्तीसगढ़ के अति पिछड़े क्षेत्र जशपुर में, 5 वनवासी बालकों के लेकर, वनवासी कल्याण आश्रम की नींव डाली। आज कल्याण आश्रम विश्व का एक मात्र जनजातीय स्वयं सेवी संगठन की अलख जगा रहा हैं। उनके मध्य समरस होकर यह अनुभूति कराना चाहता है कि वे हिन्दू समाज के ही अभिन्न अंग हैं। कल्याण आश्रम की प्रान्तीय इकाई 'सेवा समर्ण संस्थान' का पूर्वी उत्तर प्रदेश में, वर्ष 1977-78 से सेवा एवं जागरण का का कार्य प्रारम्भ हुआ।

4.2 वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना :26 दिसम्बर सन् 1952

4.3 वनसासी कल्याण आश्रम का ध्येय :'तू मैं एक रक्त' 'सर्वे हिन्दू सोदरा न हिन्दू पतितों भवेत' की अनुभूति कराना, एकात्मभाव जागरण, वनवासी के सुसुत्प स्वाभिमान को जागृति करना, स्वावलम्बी एवं सवाभिमानी बनाना, छद्म सेवियों से बचाकर उन्हें संगठिक, सुशिक्षित, संशिक्षित, संस्कारित करना संस्थान का उद्देशय हैं।

4.4 वनवासी कल्याण आश्रम का योगदान :

4.4.1 शिक्षा :

शिक्षा के क्षेत्र में छात्रावास, प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिशु केन्द्र, अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र, पुस्तकालय आदि चल रहें हैं। इन शिक्षा केन्द्रो में हमारे वनवासी बालक एवं बालिकाएं सात्विक परिवेश में, प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा जीवनोपयागी एवं संस्कारक्षम शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। छात्रावासी छात्र शिक्षा के क्षेत्र में डाक्टर्स, अभियंता एवं परास्नातकीय शिक्षा प्राप्त कर अपने व्यवसाय या सरकारी सेवाओं में कार्यरत हैं। कुछ सामाजिक कार्यकर्ता बनकर वनवासी क्षेत्र में सामाजिक जागरण कार्य में लगे हैं।

4.4.2 स्वास्थ्य:

चिकित्सा केन्द्र, औषधालय, चल चिकित्सा केन्द्र, ग्राम स्वास्थ्यय रक्षक, आदि योजनाओं के माध्यमसे औषधि वितरण एवं रोगियों का इलाज किया जाता हैं। इसके अतिरिक्त वनवासियों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति चेतना जागृत करना भी इन केन्द्रों का काम हैं।

4.4.3 स्वावलम्बन:

वनवासियों को विभिन्न प्रकार के कुटीर उद्योग, खेतीबाड़ी-, पशुपा-लन, कढ़ाई वनोपज से अनेक प्रकार की खाद्य सामग्री एवं अन्य उपयोग की वस्तुओं के निर्माण का प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे आर्थिक स्वावलम्बन की दिशा में अग्रसर हो सकें।

4.4.4 खेलकूद:

वनवासी युवक युवतियों में खेलकूद केन्दों के माध्यम से खेलकूद का प्रोत्साहन द -ेकर उनमें अनुशसन एवं नेतृत्व के गुणों को विकसित किया जाता हैं। वनवासी खेल प्रतिभाओं को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना भी इस आयाम का उद्देश्य है। ओलम्पियाड श्री

लिम्बाराम एवं एशियाड श्री रामनरेश दामोर इन्हीं के बीच के हैं। तीरंदाजी में रष्ट्रीय खेल - प्राधिकरण चयन करके सैकड़ों बालक एवं बालिकाओं के भविष्य को संवार रहा हैं।

4.4.5 संस्कार:

संस्कार के क्षेत्र में उपासनाा केन्द्र निर्माण, श्रद्धाजागरण लोक कला मण्डल, इत्यादि विविध प्रकल्प कार्यरत हैं। हमारे उपासना एवं श्रद्धाजागरण केन्दों में वनवासी बन्धु नियमित रूप सवे एकत्रित होकर भजन, कीर्तन एवं प्रार्थना का तो संयोग प्राप्त करते ही हैं साथ ही अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं का संरक्षण एवं संवर्धन करते हुए अपने ग्राम में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास भी करते हैं।

4.4.6 संगठन:

इस क्षेत्र में ग्राम समितियों, हितरक्षा वाहिनियों एवं सुरक्षा समितियों का बड़े पैमाने पर गठन हुआ है ताति वनवासी समाज आत्म विश्वास पूर्वक अपने हितों की रक्षा कर सके तथा अन्याय एवं शोषण का प्रतिकार कर सके। संगठित समाज, सबल राष्ट्र।

4.4.2 वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान:

बाला साहब जी द्वारा स्थापित संस्था वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा समाज के हित में तो कार्य किये जा रहे हैं, तथा समाज के लोगों को जागरूक करने के साथ उनकों यथासंभव मदद की जा रही हैं। समाज को उन्नत बनाने के लिए मिशन द्वारा हर वो सम्भव प्रयास किया जा रहा हैं, जो व्यक्ति कों उसकी संस्कृति से जोड़तें हुऐ आगे बढने में मदद कर सके।

इसी क्रम में मिशन में शिक्षा के क्षेत्र में अति सराहनीय कार्य किये हैंजैसे मिशन का - उद्देश्य समाज की हर वर्ग को चाहे वह दलित हो, अनाथ हो पिछड़ा हो मिशन में सबके लिए समान शिक्षा की व्यवस्था की हैं।

4.4.2.1 युवाओं में बढ़ते मूल्य:

बालासहब जी ने देश के युवा पुरूषो और महिलाओं के बीच मानव जाति की सेवा और आत्मसुधार के लिये राष्ट्र्य सेवा की अच्छी आदतों को विकसित करने के उद्देश्य युवा मंच की - स्थापना की।उन्होनें युवाओं को मातापिता की सेवा करने और गरीब-, असहाय, जरूरत मंद व्यक्तियों की मदद करने और उनके जीवन में कुछ ख्ुाशियाँ लाने के लिये विभिन्न

गतिविधियों को करने का आशीर्वाद दिया। युवाओं ने अपनी बात रखी, और भक्ति और इमानदारी से गरीबों की सेवा की।

4.4.2.2 गरीबों के लिये शैक्षिक सुविधाएं:

वंचित अनाथ और उपेक्षित बच्चों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न योजनाएं सफलता पूर्वक काम काम कर रही हैं। बीजेएम ने भारत के आदिवासी क्षेत्रों में दो पब्लिक स्कूल स्थापित किये हैं। झारखण्ड के राँची में आदिवाशियो के खूंटी और रूक्का गाँव के दो स्कूलों में आधुनिक उन्मुखकरण चल रहा है। प्रत्यक स्कूल में 700 से अधिक बच्चों को मुफ्त किताबें स्कूल की वर्दी और मध्यान भोजन दिया जाता हैं।

ज्ञानदीप विद्यालय, फरीदाबाद में (हरियाणा)28 लड़कियों के साथ 2001 में एक स्कूल खोला गया था, वर्तमान में सुबह की पाली में 700 लड़कियाँ और शाम की पाली में 300 लड़के हैं। उन्हे किताबे, वर्दी, नास्ता मुफ्त दिया जाता हैं। इसे हरियाणा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। पहले यह बच्चे या तो सड़कों पर भीख माँग रहे थे या कचरे के माध्यम से पेट भर रहे थे या बाल मजदूर के रूप में काम कर रहे थे। लेकिन अब उन्हे वनवासी कल्याण आश्रम की मदद से अपने भविष्य को बेहतर बनाने का मौका मिला हैं।

4.4.2.3 वंचित बच्चों के लिए शिक्षा: एक बेहतर भारत के निर्माण में एक आवश्यक कदम:

शिक्षा जीवन के लिए तैयारी नही हैं, शिक्षा ही जीवन हैं - जॉन डी वी

भारत वयस्कों के सबसे बडे वर्ग का घर हैं, जो अशिक्षित हैं। इस खण्ड ने कभी ज्ञान का प्रकाश नहीं देखा। क्या हमें अपनी मातृभूमि के छोटे बच्चों के साथ भी ऐसा ही करना चाहिए सिर्फ - इसलिए कि वे गरीब हैं, और स्कूल या वायबुक में भाग लेने के लिए संसाधनों की कमी हैं।

शहरी क्षेत्र में परिदृश्य बेहतर हैं, लेकिन इस देश के ग्रामीण भागों में स्थिति बिल्कुल भिन्न हैं। लड़कियों की आज भी किशोरावस्था में शादी कर दी जाती हैं। मातापिता स्कूल से अपने - बच्चों को निकाल लेते हैं क्यो ंकि या तो वे आर्थिक रूप से सक्षम न होने के कारण अपने बच्चों का समर्थन नहीं कर सकते या उन्हे अपने कार्यों में बच्चों के मदद की जरूरत हैं। नजीजातन् हमारे देश के कई युवा दिमाक अभी भी अंधेरे में हैं। उन्हे न तो शिक्षा की मिठास मिलती हैं और न ही उनके कान ज्ञान की धुन सुनते हैं।

4.4.2.4 गरीब बच्चों की शिक्षा:

वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना मानवता की सेवा के लिए की गयी थी। तीन दशकों से भी कम समय में इस धमार्थ समाज में देशभर में 80 मण्डल और सेवा समितियाँ हैं।

यह मानवता के लिए निःस्वार्थ सेवा के आदर्श का प्रचार करता हैं। यह संगठन, आध्यामिकता और चिन्तन के व्यापक छितिज को छात्रों के अन्दर स्थापित करने की कोशिश करता हैं। यह इस उद्देश्य के लिए हैं कि ध्यान, योग और भक्ति जैसे विषयों को वनवासी कल्याण आश्रम के गुरूकुल और उनके द्वारा संचालित विद्यालयों में पढाया जाता हैं।

4.4.2.5 अनाथ बच्चों का पालन पोषण एवं शिक्षा:दीक्षा-

वनवासी कल्याण आश्रम के द्वारा अनाथ बच्चों के पालन पोषण में कोई कमी नहीं रखी जाती, उन्हे हर प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। जिससे उनको ऐसा न महसूस हो कि इस संसार में उनका कोई नहीं हैं। अतः बाला साहब जी के प्रेरणा से वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा ऐसे बच्चों के लिए विद्यालय स्थापित किये गये हैं। जिन्हे बालाश्रम नाम दिया गया हैं। क्योकि श्री बाला साहब जी द्वारा इन बच्चों को देवदूत नाम दिया गया है, इसलिए इनके लिए स्थापित किये गये आश्रमों को देवदूत बालाश्रम के नाम से जाना जाता हैं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में नक्शल समस्या और हिंसा के कारण अनेक बच्चे अपने माता-पिता को खो चुके हैं। ऐसे बच्ूचों के लिए वनवासी कल्याण आश्रम ने आधुनिक सुविधापूर्ण विश्व स्तर के अनाथालय एवं शिक्षा संस्थान आरम्भ किए हैं।

उत्तर प्रदेश के कानपुर महानगर के समीप स्थित धार्मिक नगरी बिठूर में सेवारत देवदूत बालाश्रम ने एक अच्छी प्रतिष्ठा बनायी हैं। यहाँ 200 से अधिक बच्चे पब्लिक स्कूल जैसी उच्च श्रेणी की शिक्षा निःशुल्क पा रहे हैं। स्कूल मे छात्रों के बहुमुखी विकास पर ध्यान दिया जाता हैं। साथ ही उन्हे अपनी अभिरूचि की शिक्षा तथा खेलकूद के साथसाथ कम्प्युटर शिक्षा एवं अंग्रजी - शिक्षा की सुविधाएँ भी प्राप्त हैं।

भारत की सड़कों पर गुजारा करने वाले बच्चों की दशा में विश्व में सबसे ज्यादा खराब हैं। हमारे देश में करोड़ों बच्चे सड़को पर जीवन बिताने के लिए विवश हैं। इन बच्चों की दशा बडी दयनीय हैं और उन्हे सरकार व समाज से बहुत कम आशाएँ हैं। यह बालकबालिकाएँ - झोपड़ियो-सुविधारहित झुग्गीं में बेहद दुःखद अवस्था में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

वनवासी कल्याण आश्रम में हम बच्चों को अपने भीतर गहरी खोज करने और अपनी प्रतिभा को पूरे जोश और आत्म विश्वास के साथ प्रदर्शित करने की अनुमति देकर सर्वश्रेष्ठ शिक्षा

प्रदान करने का लक्ष्य रखते हैं। वनवासी कल्याण आश्रम छात्रों को आवश्यक शिक्षा प्रदान करता हैं। छात्रों को स्मार्ट क्लास के माध्ययम से आधुनिक शिक्षा में माध्यम से आवगत कराया जाता हैं।

4.4.2.6 डिजिटल शिक्षा:

नवीनतम् तकनीक का उपयोग विद्यार्थियों का जीवन बदलने में किया जाता हैं। स्पोर्टस, कम्प्यूटर, फार्मिग आटर्स, और म्यूजिक सभी आश्रमों में शिक्षा की गतिविधियों का हिस्सा हैं। आयुर्वेद, राइटिंग स्किल, मार्शल आर्ट एंड पर्सनालिटी डेवलपमेंट के परिचय को प्रोत्साहित किया जाता हैं। फरीदाबाद स्थित ज्ञानदीप विद्यालय में झुग्गीझोपडियों के सबसे गरीब समुदा-य के 1000 छात्रों को शिक्षा दी जा रही हैं। बच्चों को शिक्षा के साथसाथ आत्म निर्भरता के लिए - विभिन्न कौशलों में तैयार किया जाता हैं। गर्व के क्षणों को संजोना होता हैं, जब छात्रों को राखी और बाल दिवस मनाने के लिए राष्ट्रपति भवन और प्रधानमंत्री भवन में आमंत्रित किया जाता हैं।

4.4.2.7 व्यवसायिक प्रशिक्षण:

शिक्षा केवल एक के बाद एक विषयों को सीखने के बारे में नहीं हैं, वह जीवन की अनिवार्यताओं को सीखने और खुद को एक मजबूत और बहतर संस्करण बनन के लिए तैयार करने के बारे में हैं।हम छात्रों को अपने दिन के कुछ समय को जीवन अर्जन गतिविधियों में शामिल करने और गैर शैक्षणिक लेकिन विशिष्ट व्यापार, अभयास की व्यावहारिक प्रतियोगिता के बारे में अधिक जानने की अनुमति देते हैं। वनवासी कल्याण आश्रम के व्यवसाय प्रशिक्षण वर्ग में कोई भी व्यक्ति आपने कौशलों को निखार सकता हैं, और कक्षाओं के साथ खुद को सुविधा जनक बना सकता हैं।

4.4.2.8 वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र एवं पुस्तकें:

4.4.2.8.1 वनवासी मित्र कमाल के :'कलाम सर'

यह एक आध्यात्मिक, सामाजिक और मासिक पत्रिका हैं। जिसे हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा हैं। यह पत्रिका श्री बाला साहब जी के प्रवचन रूपी ज्ञान अमृत की संदेश वाहिका हैं, तथा इसमें श्री बाला साहब जी के विभिन्न विषयों पर दिये गये विचारों पर संकलन रहता हैं। यह पत्रिका मत, समप्रदाय, पंथ शब्द से उपर उठकर मानवता, आध्यात्म तथा मानव को शुचिता पूर्ण जीवन जीने का पाठ पढाती हैं।

4.4.2.8.2 वनवासी मित्र अजात शत्रु :'अटल'

यह पत्रिका त्रिमासिक हिन्दी पत्रिका हैं। जिसे वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा प्रकाशित किया जा रहा हैं, यह एक अनूठा प्रकाशन हैं। जिसमें वनवासी कल्याण आश्रम की गतिविधियों का पूरा कवरेज हैं।

पंचम अध्याय

वनवासी कल्याण आश्रम की शैक्षिक प्रयास

5.1 अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम भारत के बनों में बसने वाले 8 करोड़ वनवासियों के सर्वांगीण विकास हेतु कार्य में संलग्न हैं। आश्रम वनवासियों के विकास के लिए सुदूर जनजातीय गाँवों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए तरहतरह के कार्यक्रम - में हैं (झारखण्ड) चलाता रहता हे। पूरे भारत में इसकी शाखाएँ हैं। इसका मुख्यालय जमशेदपूर। इसका ध्येय वाक्य है-

''नगरवासी, गामवासी, वनवासीहम सभी है भारतवासी :''।

5.2 शिक्षा:

शिक्षा सभी बालकों का आधिकार हैं, और सुदूरवर्ती जनजाति क्षेत्रों में तो शिक्षा की सविशेष आवश्कता हैं। आज भी विद्यालयों की संख्या कम होने के कारण वनवासी बालकों को दूर दूर-तक जाना पड़ता हैं। जहाँ विद्यालय हैं वहाँ उसके गुणवत्ता पर भी प्रश्नचिन्ह हैं।

सरकार के साथ कई सामाजिक संगठन भी वनवासी क्षेत्र में शिक्षा हेतु विविध रूप में कार्यरत हैं। अपने देश में अंग्रेजो द्वारा प्रस्थापित विचारों के कारण कई व्यक्तियों को ऐसा लगता हैं कि शिक्षा यह शासन प्रशासन का- विषय हैं। परन्तु वास्तव में भारतीय विचार कहता हैं कि सबको सुलभता से अच्छी शिक्षा प्राप्त हो यह समाज का दायित्व हैं।

शिक्षा प्रसार हेतु वनवासी कल्याण आश्रम में सुदूर जनजाति क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के - प्रयास कर रहा हैं। जैसेः

अनौपचारिक शिक्षा के प्रयासवालवाड़ी :, संस्कार केन्द्र, रात्री पाठशाला, एकल विद्यालय।

औपचारिक शिक्षाप्राथमिक पाठशाला :, माध्यमिक शाला

अन्य प्रयास(ट्यूशन क्लास) अभ्यासिका :, पुस्तकालय, वाचनालय इत्यादि। ......

विशेषएकल विद्यालय यह न केवल किसी वनवासी युवक को परन्तु किसी भी सामाजिक : कार्यकर्ता को प्रेरणा देने वाला प्रकल्प हैं। जिस गाँव में एकल विद्यालय चलता है उसी गाँव का कोई युवक विभिन्न कक्षा में अध्ययन कर रहे बालकों को 3-4 घण्टे के लिये किसी घर के आंगन में, किसी मंदिर परिसर में अथवा किसी पेड़ के नीचे प्रतिदिन एकत्रित करता हैं और

शिक्षा के साथसाथ संस्कार सिंचन के भी प्रयास करता हैं-। वर्तमान में ऐसे 2000 से अधिक एकल विद्यालय कल्याण आश्रम द्वारा चल रहे हैं।

5.2.1 अब, जम्मू:कश्मीर में भी कल्याण आश्रम का प्रवेश-

अब जम्मूकाश्मीर में भी कल्याण आश्रम का प्रवेश हम सभी के लिए यह एक अत्यंत - कश्मीर के कठ-आनंद के समाचार है कि वर्तमान में जम्मू ूआ जिले में कार्य प्रगति में हैं।

5.2.2 विदर्भ के अकोट में मुट्ठिदान योजना:

विदर्भ के अकोट में मुट्ठि दान योजना विदर्भ प्रांत के अकोट नगर एक मुट्ठि अनाज दान वनवासी कल्याण आश्रम के विदर्भ प्रांत के अकोट नगर के कार्यकर्ताओं ने विद्यालय बहुत सहयोग किया।

5.2.3 अपनत्व-1000 जनजाति छात्र:दात्राओं को गुरूग्राम ने गोद लिया-

अपनत्व 1000 जनजाति छात्रदात्राओं को गुरूग्राम ने गोद लिया वनवासी कल्याण - हरियाणा प्रांत के कार्यकताओं ने फरीदाबाद-आश्रम, गुरूग्राम रोहतक, भिवानी हिसार, कैथल, पानीपत, चिका, डब्बावाली आदि जनजातियों को गोद लिया।

5.2.4 सेवा सहयोग फाउण्डेशन का सहयोग:

सेवा सहयोग फाउण्डेशन का सहयोग 29 जुलाई 2019 को महाराष्ट्र के उतखोल के विद्यालय में सेवा सहयोग फाउण्डेशन की ओर से विद्यार्थियों को शिक्षा साहित्य का वितरण हुआ।

5.2.5 गुवाहाटी में नागा बालकों का स्वागत कार्यक्रम:

गुवाहटी में नागा बालकों का स्वागत कार्यक्रम कल्याण आश्रमअसम द्वारा गुवाहटी में एक - -अनोखे कार्यक्रम का आयोजन हुआ। नागालैण्ड के टेनींग में जनजाति कल्याण आश्रम नागालौण्ड द्वारा चल रहे विद्यालय के कार्यो का निर्वहन किया जा रहा हैं।

5.2.6 चिकित्सा:

वनवासी समाज की सर्वाधिक मर्मानतक पीड़ा यह है कि बीमारी की अवस्था में दूरदूर - तक चिकित्सा सेवा की कोई व्यवस्था नहीं होती हैं। जंगल के परिवेश एवं कुपोषण के कारण कुछ बीमारियों के व्यापक प्रभाव से यह वनवासी समाज ग्रसित रहता हैं और ऐसी परिस्थिति में या तो वह अन्धविश्वास का शिकार होकर अपनी जमीन को गिरवी रखने के लिए बाध्य हो जाता है या फिर किसी पादरी के द्वारा दी जानेवाली एक गोली के बदले क्रॉस पहनकर धर्मान्तरित हो जाता है। इस समस्या के समाधान हेतु परम् पूज्यनीय श्री गुरूजी ने नागपुर से 1964 में बैद्य नारायण राव पुराणिक को जशपुर भेजा, जिन्होंने वहाँ दवाई देना एवं मरीजों को देखना एवं मरीजों को देखना प्रारम्भ किया। इनको हम कल्याण आश्रम में स्पस्थ्य सेवा का श्रीगणेश मान सकते हैं। इस चिकित्सा केन्द्र का विधिवत उद्घाटन मध्य भारत के सुप्रसिद्ध वैद्य पंडित रामनरायणजी शास्त्री के कर कमलों से हुआ। 1979 में री एकनाथ गोरे ने दो एम्बुलेंस से (जो बाला साहब के मित्र थे) जशपुर भिजवाई। इसी प्रकार झारखण्ड मं 1970 में लोहरदगा अस्पताल का प्रारभभ तब के बिहार के प्रचारक श्री शिवशूंर तिवारी के प्रयासों से संपन्न हुआ था, जिसमें नागपुर के डॉक्टर शिलेदार दप्पत्ति द्वारा विधिवत इलाज प्रारम्भ किया गया था।

1978 में जब कल्याण आश्रम का अखिल भारतीय स्वरूप बना तब कई चिकित्सकों का आगमन कल्याण आश्रम में हुआ जिनके द्वारा बिहार, उड़ीसा, बस्तर, उत्तर पूर्वाचल में कार्य का विस्तार हुआ।

5.2.7 कल्याण आश्रम द्वारा सेवाकार्य:

आपदा, वह चाहे प्राकृतिक हो या मानवतिर्मित, दोनों ही विनाश की ओर ले जाती हैं। मानव से लेकर प्राणिमात्र तक सब सहायता के लिये जब तिहार रहे हो, ऐसे समय सहायता करना इस भूमि के संस्कार है। वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता भी जब कभी आपदा आई, सहायता के लिये सदैव अगसर रहे हैं।

कुछ समयपूर्व बिहार में कोशी नदी में आई बाढ़ के समय भी कल्याण आश्रम में सेवाकार्य किया था। कार्यकर्ताओं ने अपने जान की बाजी लगाकर कई लोगों को सुरक्षित स्थानों पर लाया, सहायता शिविर आयोजित निरंतर सामुहिक भोजन में 5000 से अधिक व्यक्तियों ने भोजन कियां 11 जिलों में 114 गाँवों के 24890 परिवारों को राहत सामग्री का वितरण किया। 20 हजार साड़ियाँ, 5 हजार तीरपाल, 15 हजार स्वेटर, 7750 परिवारों को सहायता सामग्री की कीट वितरीत हुई।

संकट में फसे व्यक्तियों कजब सहायता मिली तो सभी के चेहरे पर आनेद था और कार्यकर्ताओं के मुख पर संतोष।

सो ही सेवाकार्य असम एवं आंध्रप्रदेश में भी जब बाढ़ आई, अण्डमान में जब सुनामी आई तब कार्यकर्ताओं ने किया। रीयांग जनजाति के अपने बन्धु जब विस्थापित हुए तब कल्याण आश्रम ने ही उन्हें विविध प्रकार की सहायता करते हुए उनका मनोबल बढ़ाया था। उदालगुड़ी गाँव में हुई घटना के पश्चात भी जिन बन्धुओं को सुरक्षा शिविरों में निवास करना पड़ा उन्हे भी कार्यकर्ताओं ने विविध रूप में सहायता की।

5.2.8 श्रद्धाजागरण:

कल्याण आश्रम के प्रारम्भ से ही श्रद्धाजागरण का कार्य प्रारम्भ हुआ। प्रथम अपने छात्रावास के बालकों के मन में अपने भगवान के प्रति श्रद्धाविश्वास दृढ़ करने के लिएस-आस्था-, संस्कार सिंचन के आशय से छात्रावास में भजनरामायण पाठ जैसे कार्यक्रमों का -आरती-कीर्तन- आयोजन हुआ। पश्चातआसपास के गाँवों में भजनसत्संग प्रारम्भ हुये।-

वनवासी समाज अपने सम्पूर्ण हिन्दु समाज का अभिन्न अंग हैं। घर्म के प्रति सभी में अटूट श्रद्धा हैं। अपने वनवासी बन्धुओं में ये श्रद्धाआस्था कायम रहे-, इसलिए ग्राम में रामायण मंडली, भजन की स्थापना की गई। अपनेअपने- भगवान के श्रद्धास्थानों का निर्माण किया गया। साधु-महत्माओं की पदयात्राओं का आयोजन किया गया। इसी समय में स्वामी अमरानंदजी -संत गाँव में जाना शुरू हुआ। वनवासी बन्धु -महाराज का जशपुर में आगमन हुआ। स्वामी जी का गाँव सत्संग के कार्यक्रम में आत्मीयता के साथ सह-भनभागी होते गये।

भारतवर्ष में वनवासियों के बीच इसाईयों द्वारा योजनापूर्वक अनेक प्रकार के भ्रम फैलाएँ गये। जैसे कि ‘वनवासियों का कोई धर्म नहीं हैं। वनवासी मूलनिवासी हैं। वनवासी हिन्दू नहीं है। वनवासी प्रकृतिपूजक हैं, इत्यादिइस प्रकार के भ्रम समाप्त .... होने चाहिए। वनवासी समाज इससे मुक्त होना चाहिए। इसलिए श्रद्धाजागरण का कार्य करना अत्यंत आवश्यक हैं।

5.2.9 हितरक्षा:

हितरक्षा करते ही अर्थ स्वयं स्पष्ट हो जाता है। वर्षों से जिन पर अन्याय हो रहा है, जिनका शोषण हो रहा है, ऐसे अपने वनवासी बन्धुओं के हितों की रक्षा। वैसे कल्याण आश्रम की स्थापना से लेकर आज तक हमने ऐसे कई उपक्रम किये, ऐसे कई कार्यक्रम आयोजित किये, जिसके पीछे वनवासी समाज के हितों की रक्षा का ही उद्देश्य रहा। पूज्य बालासाहब देशपांडेजी ने

स्वयं भी कोर्टकचहरी से लेकर विभिन्न प्रकारों से वनवासी बन्-धुओं को हितरक्षा के रूप में कई बार सहायता की हैं।

सन् 1990 से कल्याण आश्रम में ‘हितरक्षा‘ विभाग कार्यरत हुआ।हम सब भलीभाँति जानते है कि व्यापारियों से लेकर ठेकेदारों तक और कहीं कहीं सरकारी अधिकारियों द्वारा वनवासी समाज का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में शोषण होता हैं। राजनीति से जुड़े नेतागण भी इसमें पीछे नहीं हैं। ऐसे में अन्याय दूर करने अथवा शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने की आवश्यकता रहती हैं। अपने हितरक्षा विभाग द्वारा वनवासी समाज के पक्ष में समयसमय पर - सरकारी कार्यालयों में ज्ञापन देना, सभासम्मेलनों के माध्-यम से दबाव डालना जैसे कई प्रयास चलते रहते हैं। कई स्थानों पर रैलियों का आयोजन कर समाज में अन्याय के सामने शक्ति खड़ी करना भी आवश्यक होता हैं। समाजहित में नेतृत्व पनपता है, जो अपने अधिकारों की रक्षा हेतु सक्रिय होते हुए भी सामाजिक सद्भावना को हानि न पहुँचे, ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करता हैं।

5.2.10 नगरीय कार्य:

वनक्षेत्र में आज शिक्षा, चिकित्सा सुविधा, आर्थिक विकास की दिशा में हमें कमियाँ दिखाई पड़ रही हैं अगर नगरों में रहनेवाला समाज 100 वर्ष पूर्व ही जागृत एवं सचेत होकर वनक्षे . के बारे में सक्रिय हुआ होतो तो वनाँचल की स्थिति कुछ ओर ही होती नगरीय समाज की उदासीनता, उपेक्षा एवं वनक्षेत्र तथा जनजाति समाज के बारे में अज्ञानता के कारण आज अराष्ट्रीय, असामाजिक एवं विघटनकारी शक्तियाँ वनक्षेत्र में अपनी जड़े जमाये हुए हैं। भोला-भाला वनवासी समाज उनकी शिकार बन गया हैं।

सामान्य रूप से एसी धारणा है कि नगरवासियों से इस कार्य के लिये धन तथा संसाधन की पूर्तता यही नगरीय कार्य है। यद्यपि ‘नगरीय कार्य‘ का यह एक कार्य अवश्य है, परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण हैंनगरवासियों के ध्यान में यह लाना की वनवासी समाज इसी राष्ट्रपुरूष का ऐ अंग हैं। वनवासी बन्धुओं ने आज भी अपनी संस्कृति के जीवनमूल्यों को सम्भाल के रखा हैं।

वनवासी समाज अर्थिक रूप में अभावग्रस्त हो सकता है, किन्तु सांस्कृतिक जीवनमूल्यों को सम्भाल के रखा हैं।

वनवासी समाज आर्थिक रूप में अभावग्रस्त हो सकता हैं, किन्तु सांस्कृतिक जीवनमूल्यों की दृष्टी से सम्पन्न हैं। अतः नगरीय एवं वनवासी समाज के बीच आत्मीय सम्पर्क, सम्बन्ध स्थापित होने से जहाँ एक ओर अपने वनबन्धुओं की भौतिक उननति का मार्ग प्रशस्त

होगा वहीं दूसरी ओर नगरीय परिवारों में सांस्कृतिक जीवनमूल्यों की सम्भावनाएँ बढ सकती हैं। अतः यह आत्मीय सम्बनध स्थापित करने में कल्याण आश्रम सेतु का कार्य कर रहा हैं।

वनवासी समाज भी इस राष्ट्रकी विकास धारा में अपना योगदान दे सकता हैं। इस राष्ट्र को विकसित एवं सशक्त बनाना है तो देश के दस करोड़ वनवासी बाँधवों को भी उपर उठाना होगा, विकसित करना होगा। यह कार्य नगरवासी कर करते हैं। उसके लिये आवश्यक है नगरवासियों के मन मं भाव जगाना।

5.2.11 खेदकूद:

सन् 1952 में स्थापित इस संगठन के विकास क्रम में स्थापना के सैतीस वर्ष बाद एक नया आयाम जुड़ा एकलव्य खेलकूद प्रकल्प। -

सन 1985, कल्याण आश्रम के अधिकारियों ने वनवासी क्षेत्रों में चोल प्रकल्प चलाने के विचार से सर्वप्रथम पुना शिक्षक श्री अशोक जी आज हमारे बीच नहीं -के एक खेल (महाराष्ट्र) रहे।लेकिन प्ररम्भिक दिनों में इस प्रकल्प के लिए उनका काफी श्रम रहाप्रेरणा रहीं। उनकी - आव्हान पर भारत के कुछ प्रान्तों से15-20 कार्यकर्ता इस खेलकद प्रशिक्षण शिविर मंे भाग लेने के लिए मुबई के कन्दीवली सूर्यवंशी शासकीय शारीरिक शिक्षण महाविद्यालय में शामिल हुए। 7से 9 अगस्त 1987, ती दिन के शिविर में ही अपने खेल प्रकल्प की शुरूआत हुइ। 1988 मे जनवरी में प्रथम वनवासी खेल महोत्सव की योजना बनी। उसकी तैयारी के लिए प्रान्तप्रान्त में - खेलकूद प्रतियोगिता आयेजित करने की योजना भी बनी।

श्रीमान मिल्खा सिंह जी जिन्हे उड़न सिख ओलम्पियन‘ कहते है, इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर खिलाडियों के मन को उत्साह और प्रेरणा से भर दिया। श्री मिल्खा ंिसंह ने कहा कि वनवासी खिलड़ियों को देखकर उनके विश्वास हो गया है कि उन्होने स्वयं दौड़ में जो रिकार्ड स्थापित किया है अब वह घ्वस्त हो जायेगा। संासद व विपक्ष के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं महराष्ट्रके कुछ मंत्री भी इस सम्मेलन में आये। भारतीय खेल प्राधिकरण के अधिकारी भी खेलकूद में उच्च शिक्षा देने के लिए खिलाड़ियों का चयन करने हेतु तीनों दिन उपस्थित रहे। काफी खिलाडियों का चयन किया। फिर योजना बनी गाँवगाँव में एकलव्य - खेलकूद केन्द्र‘ प्रारम्भ करने की, बहुत ही कम समय में यह प्रकल्प देशभ्र के वनवासी क्षेत्रों में छा गया। हजारों खेल केन्द्रोमं लाखों की संख्या में आनेवाले वनवासी खिलाडीमानों पत्थर के नीचे - दबी हुई धारा फूट निकली। इस प्रकार की अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं का बड़ा कार्यक्रम हर चार वर्ष में एक बार आयोजित करने का निश्चय किया गया।

षष्ट अध्याय

वनवासी कल्याण आश्रम से सम्बद्ध सेवा समर्पण संस्थान का अवलोकन

6.1 परिचय:

शिक्षा मनुष्य के विकाश की महत्वपूर्ण प्रक्रिया हैं। इसका उद्देश्य मनुष्य का सर्वोन्मुखी विकास करना है, जिससे उसका सम्पूर्ण जीवन विकसित हो सके। ऐसी शिक्षा की देश को आवश्यकता हैं, जिससे मनुष्य का चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढे और वह स्वाभिमान के साथ स्वावलम्बी बने। भारतीय समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की संरक्षण के लिए वेदों, उपनिषदों आदि जैसे श्रेष्ठ दिव्य ज्ञान के साथ मानवता को सजाने के लिए, विशेष रूप से आधुनिकता के लिए अन्धी दौड की प्रष्ट भूमि मे प्राचीनता भारतीय संस्कृति की अनदेखी करने के कारण तथा ज्ञान और विज्ञान की संस्कृतिक महत्व को समझाने के लिए श्री बाला साहब जी ने 26 दिसम्बर 1952 में 5 वनवासी बालकों को लेर कल्याण आश्रम की नीव डाली।

768 जनजातियोंजनजातियों में फैसे-उप/, शेष भारत से उपेक्षित, विस्थापित, शोषित, अशिक्षित बन्धुओं के गौरवशाली अतीत को पुनः स्मरणकराकर, एकात्मभाव की अनुभूति कराने, चैतन्य जगाने, स्वावलम्बी बनाकर नेतृत्व क्षमता निर्माण करने, पू0 ठक्कर बापा के मन्तव्य को चरितार्थ करने, पं0 रवि शंकर शुक्ला, तत्कालीन मुख्यमं के स्वप्न को साकार कर राष्ट्रद्रोहियों के चंगूल से अपने बन्धूओं को मुक्त कराने के उद्देश्य से नागपुर निवासी पू (महाराष्ट्र)0 रमाकान्त केशव देशपाण्डे ने प0पू0 'श्रीगुरूजी' की सद्प्ररणा और महाराजा विजय भूषण सिंह देव के आत्मीय सहयोग से सन् 1952 में 5 वनवासी बालकों को लेकर कल्याण आश्रम की नींव पड़ी। वनवासी कल्याण आश्रम, आज विश्व की एक मात्र जनजातीय कल्याण की स्वयंसेवी संस्था है जो विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से, वनवासी के विकास, उसकी सनातनी संस्कृति, चैतन्य जागरण एवं परम्पराओं के संरक्षण एवं सम्बर्धन और अस्मिता की रक्षा में उनके पीछे वैसे ही खड़ा है जैसे ऋषिवर विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षार्थ, उनके पीछे बीर धनुर्धर श्री राम खड़े थे। कल्याण आश्रम से सम्बद्ध पूर्वी उत्तर प्रदेश की पंजीकृत प्रान्तीय इकाई 'सेवा समर्पण संस्थान' उनके सर्वागीण विकास में जीवनव्रती कार्यकर्ताओं के माध्ययम से सन्1977 -78 से प्रयत्नशील हैं।

6.2 संस्थापक श्री बालासाहब देश पाण्डे -

6.3 संचालक वनवासी कल्याण आश्रम -

6.4 स्थापना:

वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना 26 दिसम्बर सन् 1952 में पं0 पू0 श्री गुरू जी की सद्प्रेरणा और महाराजा विजय भूषण सिंह देव के सक्रिय सहयोग से, तत्कालीन मध्य प्रदेश, वर्तमान छत्तीसगढ़ के अति पिछडे क्षेत्र जशपुर में, 5 वनवासी बालको को लेकर, वनवासी कल्याण आश्रम की नीव डाली।

6.5 आश्रम के बारे मंकार्यालय प्रमुख श्री दिनेश कुमार जी के साथ विचार:

आश्रम के सुरम्य वातावरण में वनवासी कल्याण आश्रमकी स्थापना के पीछे श्री बाला साहब देश पाण्डे जी की भावना बहुत ऊँची तथा दूरगामी हैं। सर्वविदित हैं कि भारत की प्राचीन संस्कृति अत्यंत्य श्रेष्ट, उत्तम हैं। जो मानव के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य पर आधारित हैं, जिसके द्वारा मनुष्य को अपने आस्तित्व, जीवन के उद्देश्य, सांसारिक सफलता, धर्म ईश्वरीय आस्थ, समाज के प्रति कर्तव्य, राष्ट्रभक्ति, परोपकार की भावनो, सहयोग, समन्यवय आदि अनेक पक्षों का ज्ञान मिलता हैं। सब जानते हैं कि देश को 1000 वर्ष की दास्ता झेलनी पड़ी, पहले मुस्लिम शासको द्वारा, तदोपरांत अंग्रेजों ने लगभग 200 वर्षो तक यहाँ शासन किया। मैकाले की चतुर नीतियों के परिणाम स्वरूप देश से हमारी संस्कृति और संस्कारों का लोप हो गया। स्वधीनता के उपरान्त भी शासक वर्ग इसके प्रति उदासीन रहा।

इसी आभाव को दूर करने, श्रेष्ट संस्कारों की संस्कृति को देश में पुनर्जागृत करने के उद्देश्य से श्री बाला साहब जी ने आश्रम की स्थापना की, गुरूकुल भरतीय संस्कृति, संस्कारों एवं

आध्यात्म के संरक्षक हैं। यहाँ से शिक्षित विद्यार्थी देश में व्याप्त अज्ञान, अन्धकार , कुरीतियों, अन्धविश्वासों का समूल नाश करने में सक्षम होते हैं।

6.6 वनवासी कल्याण आश्रम को उद्देश्य:

- वनवासी बन्धुओं का सर्वांगीण विकास
- वनवासी के चैतन्य एवं स्वाभिमान को जागृत कर उनकी आस्थाओं, परम्पराओं और मान्यताओं के प्रति विश्वास जागृत करना।
- शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन के संसाधन उपलब्ध कराना।
- वनवासी में नेतृतव क्षमता विकसित कर सम्पूर्ण समाज को संगठित करना।

6.7 वनवासी कल्याण आश्रम के प्रकार:

सेवा समर्पण संस्थान में बच्चे वही रह कर विद्या ग्रहण करते हैं। आश्रम का प्रकार आवासीय हैं। तथा आश्रम में केवल बालकों को ही प्रवेश दिया जाता हैं।

6.8 आश्रम की अवस्थिति:

बिरसा मुण्डा वनवासी छात्रावास श्री रामलला रोड़, रावतपुर गाँव कानपुर में (उत्तर प्रदेश) स्थित हैं।

6.9 शिक्षा का माध्ययम :

आश्रम में शिक्षा का माध्यम हिन्दी और अंग्रेजी हैं।

6.10 वनवासी कल्याण आश्रम:

वनवासी कल्याण आश्रम के कानपुर केन्द्र स्थित आश्रम की स्थापना से पूर्व ऐसे बच्चे बढते थे। जिनका इस दुनिया में कोई नहीं हैं। उनको आश्रम में आवसीय सुविधा प्राप्त थी। लेकिन उनकी शिक्षा की व्यवस्था निकेतन में की गयी थी। जसमें आश्रम के भवनों मं े कुछ सुविधाएँ अभी भी पूर्ण नहीं हैं जो धीरेधीरे आगे चलकर सभी सुविधाओं से पूर्ण किया जायेगा। अभी - वर्तमान में100 वच्चे हैं, आश्रम में 8 कक्षाएँ हैं। आश्रम के मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही टीन शेड लगा हुआ हैं। जहाँ पर विद्यार्थी प्रार्थना करते है। आश्रम में छोटा सा खाली मैदान है जहाँ पर विद्यार्थी योगा करते हैं। तथा बगल मं पेड़पौधो से युक्त छोटा सा बगीचा हैं। और उसी के बगल में - छात्र क्रीड़ा स्थल का कार्य करते हैं।

6.11 आश्रम संचालक:

- कार्यालय प्रमुख - श्री दिनेश कुमार
- संस्था सचिव - डॉ0 रमाकान्त गुप्त
- केन्द्र प्रभारी - श्री तिलकराज
- एम0एल0 श्रीवास्तव

6.12 आश्रम में बच्चों की संख्या:

वर्तमान में आश्रम में 100 बच्चे है।

6.13 प्रवेश प्रक्रियाः

आश्रम में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से दिया जाता हैं। प्रवेश परीक्षा में 100 अंको का पेपर होता है। उसी पेपर के आधार पर परिणाम घोषित किया जाता हैं। तथा अनाथ, वंचित एवं पिछडे बच्चों का वरीयता दी जाती हैं।

6.14 आश्रम की भौतिक सुविधाएँ:

आश्रम में बच्चों को विद्याध्ययन एवं सभी आवासीय भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाती हैं। जिनका विवरण सवितार निम्न हैं-

6.14.1 कक्षा कक्ष :

आश्रम में छात्रों के अध्ययन हेतु 7 से अधिक कमरे हैं। छात्र आश्रम में प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रायः कक्षाओं में बैठकर आधुनिकता के साथ सामंजस्य बैठाकर अध्ययन करते हैं।

6.14.2 पुस्तकालय:

आश्रम में वर्तमान में एक पुस्तकालय है जो समय के साथ उन्नत होता जा रहा है। जिसमें पुस्तको की संख्या कम है। तथा जितनी जरूरत है। उतनी है पुस्तके लगायी गयी हैं।

6.14.3 खेल का मैदान:

आश्रम परिसर में बच्चों के खेलन के लिए एक बडा खेल का मैदान हैं जिसमें विद्यार्थी अपने दिनचर्या के अनुसार जो खेल का समय मिलता है उसमें विभिन्न प्रकार के खेलखेलते हैं। - खेल का मैदान घास युक्त हैं। जिससे की अगर कोई विद्यार्थी गिर जाये तो उसको चोट न लगे ओर कोई हानि न हो।
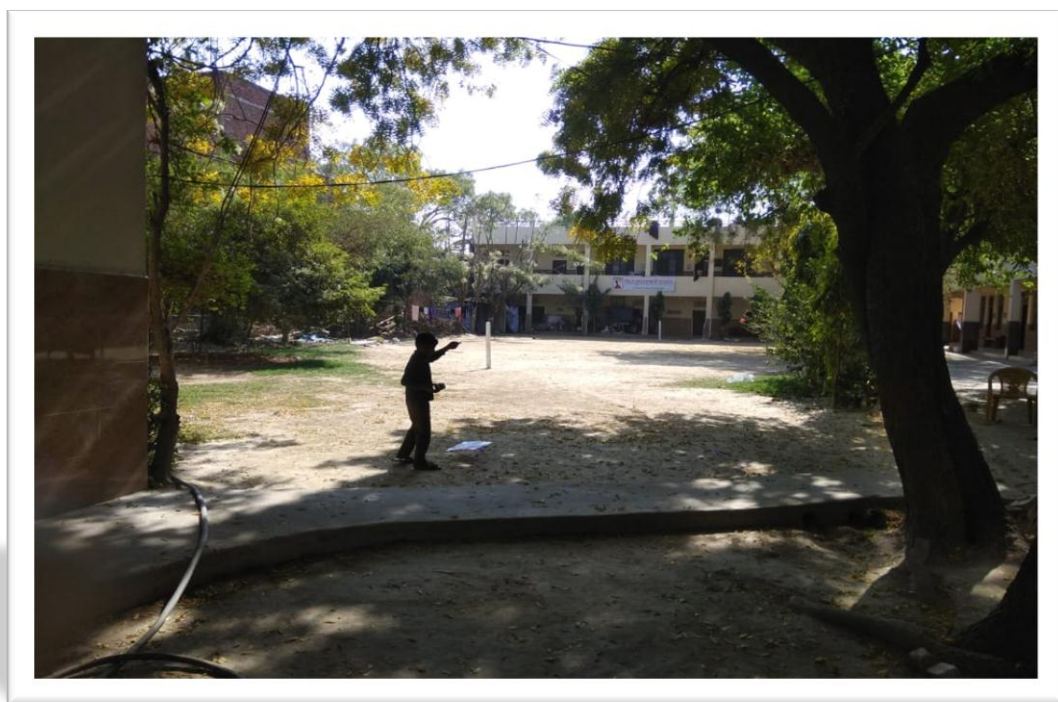
6.14.4 योग के लिए स्थान:

आश्रम में ही विशाल हरा मैदान हैं। जहाँ पर प्रातः जागरण के बाद नितय क्रिया से निवृत्त होकर आश्रम के सभी विद्यार्थी योगाभ्यास करते हैं। योगाभ्यास करने से शरीर का विकास होता हैं तथा शरीर के अंगो की थकावट नष्ट होती हैं। वही योग से मन की चंचलता दूर होती है। आलस्य मिटता हैं, एवं शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि होती हैं और मुख की कांति में निखार आता हैं।

6.14.5 भोजन व्यवस्था:

आश्रम में विद्यार्थियो के विद्या अध्ययन के साथसाथ उनके आहार पर भी ध्यान दिया - जाता हैं। भोजनालय में सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ पौष्टिक भोजन तैयार किया जाता हैं। भोजनालय में भूमि पर आसन बिछाकर उस पर बैठकर विद्यार्थी भोजन करते हैं। भोजन के अन्तर्गत चावल, दाल, रोटी सब्जी, खीर, पापड, सुखी सब्जी, पनीर व अन्य पौष्टिक भोजन प्रदान किया जाता हैं।

6.14.6 शैक्षिक वातावरण:

आश्रम का शैक्षिक वातावरण शहर की भीड़भाड़ से दूर एवं कोलाहल रहित पूर्णतः शांत एवं सुखमय हैं। आश्रम का वातावरण शहज, सुरम्य, शैक्षिक रचनात्मक, प्रेरणादायी तथा अनुशासित हैं।

6.14.7 दिनचर्या:

- सुबह 4 बजे जागरण
- सुबह 5 बजे-आरती प्रातः स्मरण योग
- सुबह 6 बजे जलपान
- सुबह 7 बजे स्कूल जाने का समय
- दोपहर 2.30 या 3 बजे लौटने का समय
- सायं काल में 4 से 5 जलपाल
- शायं 5 से 6 बजे क्रीड़ा
- शायं 6.30 से आरती (संघ्याकालीन) भजन, ऊँ जय जगदीश हरे
- शायं 7 बजे ट्यूटर
- हर कक्षा के लिए अलग-अलग शिक्षक
- कम्प्यटर के लिए अलग-अलग शिक्षक (7-9 बजे तक)
- रात्रि 9 बजे भोजन
- 10 बजे दोष विसर्जन (जिनको राजि 10 बजे के बाद पढना है तो हाल में पढेगे)

6.14.8 निःशुल्क एवं आवासीय शिक्षा:

आश्रम में छात्रों को निःशुल्क एवं आवासीय शिक्षा दी जाती हैं। छात्र आश्रम में ही रहकर शिक्षा ग्रहण करते है यहाँ पर श्रेष्ट आचार्यो द्वारा उत्तम एवं संस्कारिक शिक्षा देकर सुंदर और श्रेष्ट व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता हैं। आश्रम आवासीय होने के कारण सभी विद्यार्थी आश्रम परिसर में आचार्यो के देखरेख में रहते हैं।

6.14.9 संगीत शिक्षा:

आश्रम में शिक्षा के विभिन्न आयामों के अन्तर्गत संगीत शिक्षा भी एक आयाम हैं। आश्रम में विद्यार्थियो को संगीत की जडे हमारी भारतीय संस्कृति में बहुत गहरी हैं। प्राचीनकाल से ही भारत में संगीत की परम्परा रही हैं।

6.14.10 कम्प्यूटर शिक्षा:

वर्तमान समय में कम्प्यूटर मनुष्य की जिंदगी का एक हिस्सा बन गया हैं। आजकल हर कार्य लगभग कम्प्यूटर से होने लगे हैं। इसलिए वर्तमान समाज को देखते हुऐ विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथसाथ कम्प्यूटर का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसे बच्चे - संास्कृतिक शिक्षा के साथ आधुनिक जरूरतो को भी पूरा करते रहे।

6.14.11 प्राणी मात्र के प्रति संवेदना:

ईमानदारी, साहिष्णुता, सौहार्द, सेवाभाव, परिवार व्यवस्था और अतिथि सत्कार, अन्य लोगों के काम आना, दूसरो की सेवा, सहायता व उपकार करना आश्रम से निकलना विद्यार्थी अपना सौभाग्य समझता था। ऐसे ही दिव्य आचरण की श्रेष्टता और चरित्र की उच्चता के चलते भारत विश्वगुरू रहा।

6.14.12 सेवा सद्धभाव:

यहाँ गरीब से गरीब भी परोपकार के लिए बाग बगीचे लगवाने के लिए, कुएँता-लाब खुदवाने, अन्य क्षेत्र चलवाने, अस्पताल धर्मशाला खुलवाने, देवालयों का निर्माण करवाने, विद्यालयों में शिक्षण आदि जनकल्याणकारी कार्यों को अंजाम देने में गौरवान्वित महसूस करता था। हमारी शिक्षा नीति हर भावी पीढी में यही संस्कार तो उगाता आ रहा हैं सदियों से। वास्तव में आश्रम ऐसे ही दिव्य मानवों के निर्माण के केन्द्र हैं, जहाँ गढे गये विद्यार्थी परिवार समाज के बीज अपने शुभ संस्कारों, ज्ञान चरित्र, स्वभाव, सहकारिता पूर्ण दृष्टिकोण के सहारे देवत्व की स्थापना करते हैं और धरती पर स्वर्ग ले आने के लिए जीवन जीते हैं।

6.14.13 मनोविज्ञान का संयोजन:

यहाँ बच्चों को ऐसा वातावरण दिया जाता हैं कि उनका जागरण एवं शयन आनंद से भरा रह सके। प्रातः काल जागरण, भगवद् स्मरण, उषापान, नित्यकर्म, व्यायाम प्रातरास अध्ययन, दोपहर भोजन, विश्राम, पुनः अध्ययन, सन्ध्योपासना, रात्रि भोजन, भ्रमण, अध्ययन फिर ईशस्मरण के साथ रात्रि शयन तक शूक्ष्म मनोविज्ञान का कुशल संयोजन देखने को मिलता हैं।

6.14.14 सर्वांगीण विकासपरक शिक्षण:

विद्यार्थी एवं आचार्य के बीच गहन समन्यवय एवं उनके आचार्यो की सत्त करूणा भरी दृष्टि के परिणाम स्वरूप आश्रमों में शिक्षा ग्रहण करने वाली सभी विद्यार्थी एक से बढकर एक संवेदनशील, सेवाभावी, मेधावी, कुशाग्र, बुद्धि वाले बनते हैं। ये आचार्यों के दिशानिर्देशन में अपने पाठ्यक्रम को पूरा करते हैं, साथ ही प्राचीनउननिषद-अर्वाचीन वांगमय वेद-, रामायण, पुराण, स्मृतिग्रंथ-, महापुरूषों के जीवन चरित्र और अन्य सामाजिक, वैज्ञानिक, पठनीय साहित्य के स्वाध्याय, चिंतनमनन शोध में भी अहर्निश संलग्न रहते हैं।-

6.14.15 व्यावहरिक चुनौतियो से जुडाव:

सफलता के शिखर पर पहँचने के लिए बच्चो को ऐसे व्यवहार परक सूत्र सिखाये जाने हैं कि छोटी छोटी असफलताओं-में वह हताश न हो, सफलता की उचाई पर पहुँचकर वहाँ स्थिर रहने, निरंतर अपनी छमताओं को बढाते, विकास की यात्रा को लगातार जारी रखने के अभ्यास कराये जाते हैं। इसके लिए उन्हे समाज व्यवस्था की अनेक व्यवहारिक प्रयोगो से गुजारा जाता हैं। व्यवहारिक सुत्रों में सफलता के लिए सबसे पहले अपना लक्ष्य निर्धारित करना, लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण, असफलता से डरकर प्रयास कभी न छोडना, आलस्य और प्रमाद को अपने पास मत आने देना, अहंकार से सदैव बचकर रहने की कला,सीखने की लालसा, लगन और मेहनत को बढाते रहना, हिम्मत और हौसला कभी मत हारना, चुनौतियों का सामना करना। जैसे सूत्रो का व्यवहारिक प्रयोग उनसे कराये जाते ताकि बुरी से बुरी विनरीत स्थिति में वे हताशनिराश न हों - और अपने को खडा कर सके।

सप्तम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

7.1 निष्कर्ष:

श्री बाला साहब जी के शैक्षिक विचारों, शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करने के पश्चात् यह स्पष्ट हैं कि श्री बाला साहब जी के शैक्षिक विचारों एवं उनके शैक्षिक दर्शन का वर्तमान सामाजिक परिपेक्ष्य में अहम भूमिका हैं। श्री बाला साहब जी के शिक्षा में योगदान एवं उनकी वनवासी कल्याण आश्रम के शैक्षिक प्रयाशो के अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुएं।

- ज्ञान व अनुभव पर बल- श्री बालासाहब बालक को ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करने पर बल देते है। उनका विचार हैं कि शिक्षा का उद्देश्य पढ़ना नहीं ज्ञान एवं अनुभव को आत्मसात करना हैं।
- आध्यात्मिक शिक्षा पर जोर: श्री बालासाहब जी के अनुसार ईश्वर सर्वज्ञ तथा सर्वव्यापी हैं। विद्या मुक्ति का मार्ग प्रदान करती हैं। ईश्वर प्राप्ति ही मुक्ति है। आध्यात्मिक शिक्षा जीवन मूल्यों, नैतिकता, विकास पर बल देती हैं।
- चारित्रिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व विकास पर बल: वनवासी कल्याण आश्रम के प्राथमिक उद्देश्य बालकों का चारित्रिक, नैतिक तथा व्यक्तित्व का विकास करना हैं। छात्रों में आत्मसंयंम, आत्मप्रेम, सहयोग, सदभावना आदि सद्गुणों को विकसित करना है।
- आज्ञापलन, अनुशासन अतिथी सम्मान, दूसरो के भावनाओं का सम्मान, सहयोग सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन आदि गुण भी विद्यार्थियों में विकसित करने चाहिएं।

7.2 शैक्षिक उपादेयता:

प्रस्तुत शोध का शीर्षक वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान हैं। जो वर्तमान में अत्यन्त हमत्वपूर्ण तथा अनुसन्धान के क्षेत्र में उपयोगी हैं।

- श्री बालासाहब जी के शैक्षिक दर्शन को पाठ्यक्रम में स्थान मिलना चाहिए।

- वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक दर्शन वर्ण, जाति, वेश या किसी अन्य भेदों के झगडों मे न पड़कर सम्पूर्ण मानव को एक ही मापतौल से सद्गति देने तथा सभी धर्माके प्रति सहिष्णता उद्घाटित करता है।
- आज सामाजिक बदलाओं को देखतेहुएं, वर्तमान शिक्षा पद्धति में श्री बालासाहब जी के शैक्षिक विचारों उनके दर्शन, शैक्षिक विधियों एवं प्रविधियों को अपनाना आपश्यक हैं,
- तभी हम एक शांत सौहार्दपूर्ण तथा प्रगतिशील समाज की रचना कर सकते हैं।
- श्री बाला साहब जी का शैक्षिक दर्शन चोरी, व्यभिचार झुठ, कपट, हिंसा अभक्ष्य भोजन आदि नीच कर्मो के प्रति विमुखता की ओर मोड़ने के लिए प्रेरित करता हैं।

7.3 अध्ययन के सुझाव :

शोध अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते है कि आधुनिक शिक्षा पद्धति सामाजिक, राष्ट्रीय प्रगतिशीलता एवं बालक के व्यक्तित्व को विकास करने में अक्षम हैं। इसलिए आधुनिक शिक्षा पद्धति में श्री बालासाहब जी के शौक्षिक दर्शन का शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिष्ठित स्थान मिलना चाहिए।

- वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक दर्शन शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय है। अतः उनके शैक्षिक प्रयासो को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देने एवं सहयोग करने की आवश्यकता हैं।
- प्राचीनकाल में आध्यात्मिकता से सामाजिक, आर्थिक, सत्य आचरण, प्रेम, अहिंसा की नीव रखी गयी थी। मानव का मूलभूत लक्ष्य जिज्ञासा की शान्ति था, जिसका संरक्षण आश्रम में होता था। श्री बालासाहब जी की शैक्षिक विचारधारा इसी से सम्बन्धित हैं।, जो वर्तमान काल में महत्वपूर्ण सार्वकालिक एवं वर्णीय हैं।

7.4 भावी शोध हेतु सुधाव:

- आधुनिक भारतीय शैक्षिक समस्याओं में श्री बालासाहब जी की शैक्षिक दर्शन की भूमिका का अध्ययन किया जा सकता हैं।
- श्री बाला साहब जी एवं अन्य धर्मगुरूओं के शैक्षिक विचारो का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।
- अन्य धार्मिक संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया जा सकता हैं।
- वनवासी कल्याण आश्रम का भारत में गुरूकुल पद्धति से संचालित अन्य आश्रम मे तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

● शर्मा, आर० ए० (2008) अध्यापक शिक्ष एवं प्रशिक्षण तकनीकि

मेरठ: आर० लाल बुक डिपो । कपिल एच0 के (2007)।
अनुसंधानविधियाँ, आगरा एच० पी० भार्गव बुक हाउस।

● शर्मा, निधि। (2014) । "मध्य कालीन कवियों द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों का आधुनिक परिपेक्ष्य में अध्ययन कबीर एवं तुलसी के सन्दर्भ में, पीएच० डी०-शिक्षाशास्त्र, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ। (शोध गंगा)

• जोशी, आर० सरिता। (2014) "निराला की कथा साहित्य मानवता वादी दृष्टि का अनुशीलन" पीएच० डी०- सरदार पटेल विश्वविद्यालय गुजराज (शोध गंगा)

● शर्मा, उषा (2008) "रामचरित मानस से अन्तर्निहित शैक्षिक विचार धारा एवं मूल्य" पीएच० डी० - शिक्षा शास्त्र, वनस्थली विद्यापीठ निवाईं (शोध गंगा)

• यादव, राम प्रकाश (2020)। ईस्कान का शैक्षिक योगदान एम० एड०, लघु शोध प्रबन्ध, अतर्रा पो० ग्रे० कॉलेज अतर्रा

•अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम https://www.kalyanashram.org/

• सिंह, रेनू (2008)| भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षणिक उत्थान भे, पीएचडी-शिक्षाशास्त्र बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी।

http://hal.handle.net/10603/12262

● गुप्ता, सत्येन्द्र (2005)| बुन्देलखण्ड उत्तर–प्रदेश क्षेत्र में सरस्वति विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन, पी–एच० डी० शिक्षणास्त्र बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी।

परिशिष्ट

अः वनवासी कल्याण आश्रम, कानपुर (उत्तर–प्रदेश) का अवलोकन चित्रावली

बः अध्ययन से संबंधित साहित्य, समाचार, पत्र–पत्रिकाएं

परिशिष्ट : अ

वनवासी कल्याण आश्रम, कानपुर (उ०प्र०) का अवलोकन चित्रावली

से सम्बद्ध
सेवा समर्पण
प्रांतीय कार्यालय :

परिशिष्ट : ब

अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य, समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ
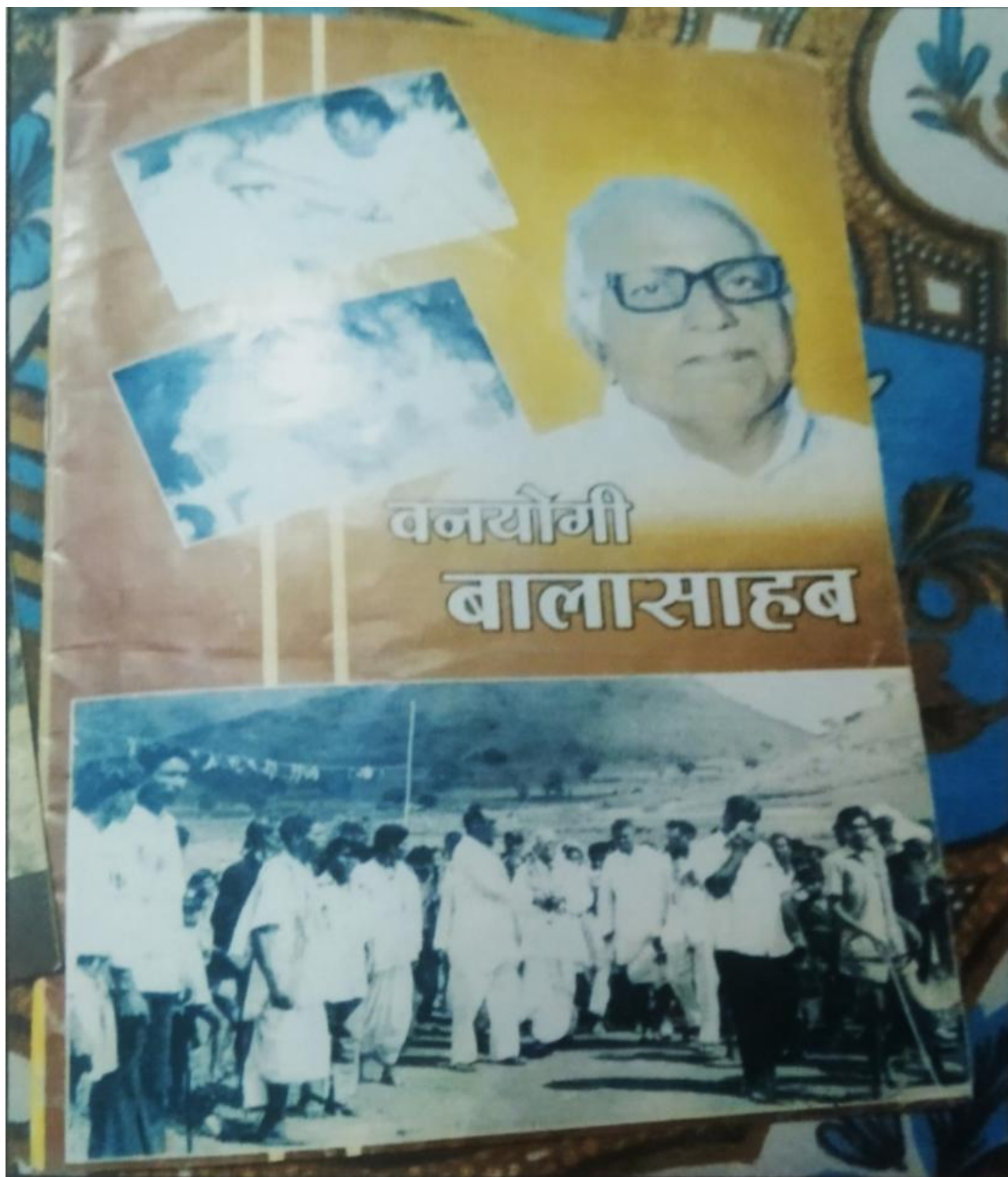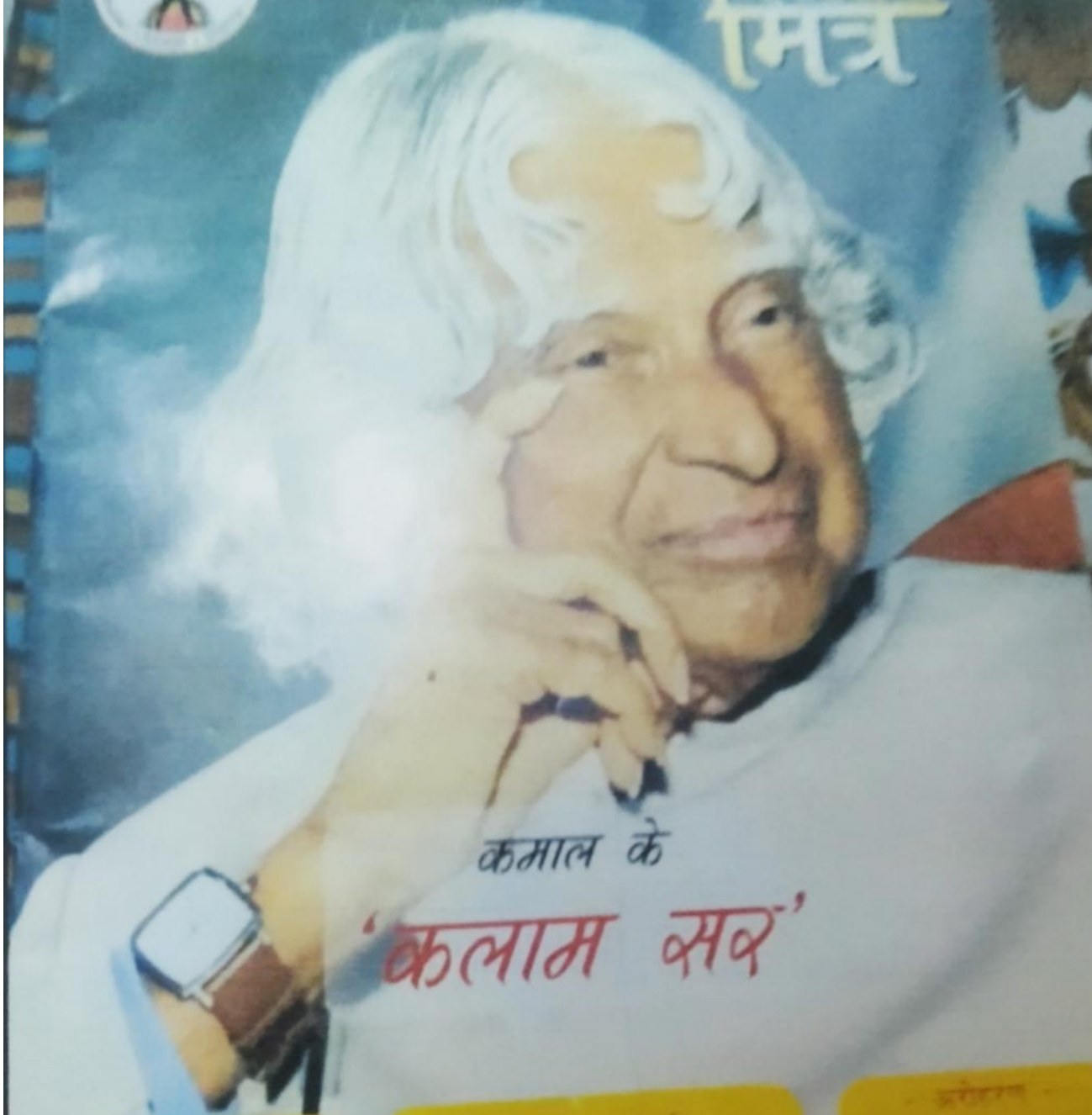
मित्र
कमाल के
'कलाम सर'
अवतरण
१५ अक्टूबर, १९३१
धनुषकोटि,
रामेश्वरम्-चेन्नई,
जनवरी, फरवरी,
मार्च, २०१८,
तृतीय वर्ष, एकादश अंक
२७ जुलाई, २०१५,
मेथनी चिकित्सालय,
शिलांग, मेघालय

"आपकी तरह मैं भी
सपने देखती हूँ"

BHARAT
अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम
ISBN 978-93-5636-415-8
9 789356 364158 >